आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-142 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | सितंबर 2026 | मूल्य - 5 रूपए

अपने अधिकारों की समझ और अपनी आवाज के साथ बदलाव की राह पर बढ़ते कदम

बालकनामा रिपोर्टरः प्रीति

किसी बस्ती में बच्चे को स्कूल जाने में परेशानी हो, किसी लड़की पर कम उम्र में शादी का दबाव हो या किसी बच्चे के साथ गलत व्यवहार हो रहा हो, तो इन समस्याओं को सबसे करीब से बच्चे ही देखते हैं। लेकिन क्या उन्हें पता होता है कि ऐसी स्थिति में उन्हें क्या करना चाहिए? अपनी बात किससे कहनी चाहिए? और अगर कोई उनकी बात नहीं सुनता, तो वे अपनी आवाज आगे कैसे पहुंचा सकते हैं? दिल्ली, गुरुग्राम और जयपुर में आयोजित बढ़ते कदम लीडर्स ट्रेनिंग में बच्चों ने ऐसे ही सवालों को समझने और उनके जवाब खोजने की कोशिश की। चेतना संस्था के खिलती कलियाँ, स्ट्रीट टू स्किल्स और चमकते सितारे जैसे कार्यक्रमों से जुड़े इन तीन प्रशिक्षणों में कुल 109 बच्चों ने हिस्सा लिया। इनमें 50 बालक और 59 बालिकाएं शामिल थीं। दिल्ली में 45 बच्चों, गुरुग्राम में 34 बच्चों और जयपुर में 30 बच्चों ने भाग लिया। इन प्रशिक्षणों में बच्चों ने बाल अधिकारों, नेतृत्व, बालकनामा में खबर लिखने, अपनी बात रखने और समुदाय की समस्याओं के समाधान के लिए सही लोगों तक पहुंचने के बारे में सीखा। उनके लिए यह केवल प्रशिक्षण में शामिल होने का मौका नहीं था, बल्कि यह समझने का अवसर भी था कि वे अपने जीवन और आसपास होने वाली घटनाओं को लेकर क्या भूमिका निभा सकते हैं। बच्चों की जिंदगी में कई ऐसी परेशानियां होती हैं, जिनके बारे में वे खुलकर बात नहीं कर पाते। कभी परिवार की आर्थिक स्थिति उनकी पढ़ाई में रुकावट बनती है, तो कभी घर की जिम्मेदारियों के कारण उन्हें अपनी जरूरतों को पीछे रखना पड़ता है। कुछ बच्चे अपने आसपास बाल श्रम, बाल विवाह, हिंसा और असुरक्षा जैसी स्थितियां देखते हैं। कई बार उन्हें यह भी नहीं पता होता कि मदद मांगने के लिए कहां जाना चाहिए। ऐसे में केवल बच्चों को उनके अधिकारों के बारे में जानकारी देना ही काफी नहीं है। उन्हें यह भरोसा देना भी जरूरी है कि उनकी बात महत्वपूर्ण है और वे सुरक्षित तरीके से अपनी परेशानी साझा कर सकते हैं। दिल्ली में आयोजित बढ़ते कदम लीडर्स ट्रेनिंग में बच्चों ने नेतृत्व के गुणों, बढ़ते कदम फेडरेशन की भूमिका और बालकनामा रिपोर्टर की जिम्मेदारियों को समझा। गतिविधियों के माध्यम से उन्होंने जाना कि एक अच्छा लीडर केवल दूसरों को निर्देश देने वाला व्यक्ति नहीं होता। वह दूसरों की बात सुनता है, जिम्मेदारी लेता है, साथियों की मदद करता है और किसी समस्या का हल खोजने के लिए सबको साथ लेकर चलता है। बच्चों ने बढ़ते कदम फेडरेशन के बारे में जाना कि इसके माध्यम से वे अपने समुदाय के मुद्दों को उठा सकते हैं और दूसरे बच्चों को भी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक कर सकते हैं। बच्चों के लिए यह समझना जरूरी था कि किसी समस्या को देखकर केवल उसके बारे में बात करना ही पर्याप्त नहीं है। यह भी सोचना चाहिए कि उस समस्या को दूर करने के लिए क्या किया जा सकता है और किस व्यक्ति या विभाग से मदद मांगी जा सकती है। दिल्ली के प्रशिक्षण में बालकनामा रिपोर्टिंग पर विशेष चर्चा हुई। बच्चों को बताया गया कि खबर कैसे पहचानी जाती है, जानकारी कैसे जुटाई जाती है, लोगों से बातचीत कैसे की जाती है और खबर लिखने से पहले तथ्यों की जांच क्यों जरूरी है। उन्होंने यह भी सीखा कि किसी घटना को अपनी समझ या सुनी-सुनाई बातों के आधार पर लिख देना सही नहीं है। खबर में शामिल जानकारी की पुष्टि करना और बच्चों की पहचान व निजी जानकारी की सुरक्षा का ध्यान रखना भी जरूरी है। यह सीख



इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि बच्चे अपने आसपास होने वाली ऐसी घटनाओं को देखते हैं, जिनका असर सीधे उनकी जिंदगी पर पड़ता है। लेकिन किसी समस्या को देखना और उसे जिम्मेदारी से सामने लाना दो अलग बातें हैं। बालकनामा के माध्यम से बच्चे अपने समुदाय की समस्याओं को शब्द दे सकते हैं, बशर्ते वे सही जानकारी जुटाएं और जिम्मेदारी के साथ रिपोर्टिंग करें। प्रशिक्षण के दौरान बच्चों ने सरकारी अधिकारियों को पत्र लिखने का अभ्यास भी किया। 'माय वॉइस, माय राइट' गतिविधि में उन्होंने अपने समुदाय की समस्याओं को पहचाना और यह समझा कि किस समस्या के लिए किस अधिकारी से संपर्क किया जा सकता है। स्कूल से जुड़ी समस्या के लिए प्रधानाचार्य और स्थानीय सुविधाओं से जुड़े मुद्दों के लिए संबंधित विभाग या जनप्रतिनिधि तक अपनी बात पहुंचाई जा सकती है। बच्चों ने सीखा कि अपनी परेशानी को साफ शब्दों में लिखना और उसके समाधान की मांग करना भी बदलाव की दिशा में एक कदम है। इस प्रशिक्षण में शामिल 13 वर्षीय प्रिया (परिवर्तित नाम) ने बताया कि पहले उन्हें बालकनामा रिपोर्टर की जिम्मेदारियों और साप्ताहिक रिपोर्टिंग योजना के बारे में पूरी जानकारी नहीं थी। प्रशिक्षण के बाद उन्हें खबर तैयार करने की प्रक्रिया समझ में आई और वे समुदाय के मुद्दों पर रिपोर्टिंग करने को लेकर अधिक आत्मविश्वास महसूस करने लगीं। 12 वर्षीय प्रीतम (परिवर्तित नाम) ने औपचारिक पत्र लिखने का तरीका सीखने की बात कही, जबकि 14 वर्षीय राहा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि अब उन्हें पता है कि बच्चे भी अपने समुदाय की समस्याओं के समाधान के लिए जनप्रतिनिधियों और सरकारी अधिकारियों को पत्र लिख सकते हैं। इन बच्चों के अनुभव बताते हैं कि जब उन्हें सही जानकारी और अभ्यास मिलता है, तो वे अपनी बात रखने के नए तरीके सीख सकते हैं। गुरुग्राम में आयोजित प्रशिक्षण में बच्चों ने बाल अधिकारों, बढ़ते कदम फेडरेशन और बालकनामा के काम को समझा। प्रशिक्षण में बाल विवाह, बाल श्रम, बच्चों के साथ होने वाली हिंसा और बाल यौन शोषण से सुरक्षा जैसे विषयों पर चर्चा की गई। बच्चों को बताया गया कि किसी परेशानी या गलत व्यवहार का सामना करने पर चुप रहना जरूरी नहीं है। वे किसी भरोसेमंद व्यक्ति से बात कर सकते हैं और जरूरत पड़ने पर सहायता ले सकते हैं। बच्चों ने यह भी जाना कि अपने साथियों की बात सुनना और उनकी परेशानी को गंभीरता से लेना क्यों जरूरी है। अगर कोई बच्चा अपनी समस्या साझा करता है, तो उसका मजाक उड़ाने या उसे दोष देने के बजाय उसकी बात सुननी चाहिए। कई बार एक बच्चे को केवल इतना भरोसा चाहिए होता है कि कोई उसकी बात सुनेगा और जरूरत पड़ने पर उसकी मदद करेगा। नेतृत्व का एक हिस्सा यह भी है कि बच्चे अपने साथियों के प्रति संवेदनशील रहें और उन्हें अकेला महसूस न होने दें। गुरुग्राम के प्रशिक्षण में बच्चों को खबर लिखने और समुदाय के मुद्दों को पहचानने की सीख भी दी गई। उन्होंने समझा कि किसी घटना को खबर बनाने से पहले उससे जुड़ी जानकारी जुटानी चाहिए और तथ्यों की पुष्टि करनी चाहिए। इससे बच्चे अपने आसपास की समस्याओं को सही तरीके से सामने लाने की क्षमता विकसित कर सकते हैं। बालकनामा के माध्यम से उनकी आवाज दूसरे बच्चों, परिवारों और संबंधित लोगों तक पहुंच सकती है। जयपुर में चमकते सितारे परियोजना के तहत बनीपार्क कार्यालय में बढ़ते कदम लीडर्स ट्रेनिंग आयोजित की गई। प्रशिक्षण की शुरूआत बच्चों के परिचय से हुई। इसके बाद आंखों पर पट्टी बांधकर चित्र में सही जगह बिंदी लगाने की गतिविधि करवाई गई। बच्चों ने उत्साह के साथ खेल में भाग लिया। इस गतिविधि के माध्यम से उन्होंने ध्यान से सुनने, अनुमान लगाने और अपनी समझ के आधार पर निर्णय लेने का अभ्यास किया। इसके बाद बच्चों को समूहों में बांटकर

शेष पृष्ठ 2 पर

बीमार नहीं, फिर भी पैसे देकर बनाया जाता है मरीज

बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी

जयपुर की कच्ची बस्ती मुहावणा से सामने आई एक चौंकाने वाली जानकारी ने स्वास्थ्य व्यवस्था और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की मजबूरी को लेकर सवाल खड़े किए हैं।बस्ती की 13 वर्षीय बालिका राधिका (परिवर्तित नाम) के अनुसार, कुछ लोगों को पैसे देकर अस्पताल ले जाया जाता है और वहां उन्हें मरीज की तरह रखा जाता है, जबकि वे वास्तव में बीमार नहीं होते। बालिका बताती है कि यह सिलसिला काफी समय से चल रहा है। बस्ती से लोगों को समूह में अस्पताल ले जाया जाता है। अस्पताल पहुंचने से पहले उन्हें बीमार व्यक्ति जैसा दिखाने के लिए कभी हाथ या पैर पर पट्टी बांधी जाती है और कभी दूसरे तरीकों से मरीज जैसा बनाया जाता है। इसके बाद उन्हें अस्पताल के बेड पर मरीजों की तरह लिटा दिया जाता है। 14 वर्षीय कीर्ति (परिवर्तित नाम) के अनुसार, एक बार में बस्ती से करीब 60-70 लोगों को अस्पताल ले जाया जाता है। इनमें बच्चे भी शामिल होते हैं। अस्पताल में कुछ समय रहने के बाद उन्हें इसके बदले करीब 400 से 500 रुपये दिए जाने की बात सामने आई है। बस्ती के कई परिवार आर्थिक रूप से कमजोर हैं। दिनभर मेहनत-मजदूरी करने के बाद भी कई बार वे उतनी कमाई नहीं कर पाते, जितनी इस गतिविधि में कुछ घंटों के बदले मिलने की बात बताई जा रही है। यही आर्थिक मजबूरी कुछ लोगों को इस काम के लिए तैयार कर देती है। कीर्ति कहती है, ''हम दिनभर मेहनत करने के बाद भी कई बार 500 रुपये नहीं कमा पाते। अगर बिना मेहनत किए सिर्फ अस्पताल के बेड पर लेटने के बदले इतने पैसे मिल जाएं, तो किसे बुरा लगेगा?'' यह बात सिर्फ आर्थिक मजबूरी को नहीं दिखाती, बल्कि यह भी बताती है कि जरूरतमंद लोगों की मजबूरी का फायदा उठाया जा सकता है। इस पूरे मामले का सबसे चिंताजनक पहलू बच्चों की भागीदारी है। जिन बच्चों की उम्र अस्पताल और स्वास्थ्य सेवाओं को समझने, पढ़ाई करने और खेलने की है, अगर उन्हें इस तरह की गतिविधियों

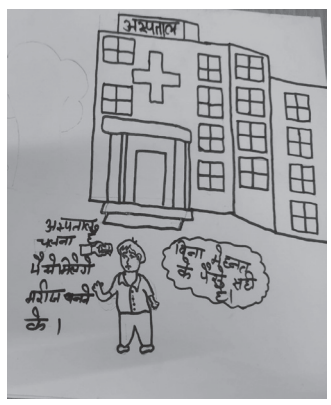

में शामिल किया जा रहा है, तो यह उनकी शिक्षा, सुरक्षा और अधिकारों से जुड़ा गंभीर मामला है। अगर अस्पताल में मरीजों की संख्या बढ़ाकर दिखाने या किसी दूसरे आर्थिक लाभ के लिए स्वस्थ लोगों को मरीज के रूप में पेश किया जा रहा है, तो यह सिर्फ बस्ती के लोगों के शोषण का मामला नहीं है। इससे स्वास्थ्य व्यवस्था की पारदर्शिता और उस पर लोगों के भरोसे को लेकर भी सवाल उठते हैं। बालकनामा का उद्देश्य किसी व्यक्ति या संस्था पर आरोप लगाना नहीं है। हमारा उद्देश्य बच्चों और समुदाय से सामने आई ऐसी चिंताजनक बातों को जिम्मेदारी के साथ सामने रखना है। ऐसे मामलों में सच्चाई की निष्पक्ष जांच होना, बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना और जरूरतमंद परिवारों को सम्मानजनक आजीविका के अवसर मिलना जरूरी है।

ढोल और खिलौनों के बीच गुजरता बचपन

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः अनिया

जयपुर की लखेसरा कच्ची बस्ती में रहने वाली 12 वर्षीय बातूनी रिपोर्टर अनिया ने बच्चों के जीवन से जुड़ी एक ऐसी तस्वीर सामने रखी, जिसमें 15 अगस्त की खुशी और बच्चों की रोजमर्रा की मजबूरियां एक-दूसरे से जुड़ी दिखाई देती हैं। अनिया बताती है कि स्वतंत्रता दिवस नजदीक आते ही बस्ती के बच्चों के हाथों में ढोल, पुपांडी, सीटी और छोटे-छोटे तिरंगे नजर आने लगते हैं। बाजार से खरीदे गए इन खिलौनों की आवाजों के बीच बच्चे दिनभर समूह बनाकर खेलते और नाचते हैं। कई बार अभिभावक भी बच्चों के साथ इन खिलौनों को बजाकर उनका उत्साह बढ़ाते हैं। लेकिन इन खिलौनों के पीछे केवल मनोरंजन की कहानी नहीं है। बस्ती के कई परिवारों के लिए 15 अगस्त अतिरिक्त आय का अवसर भी लेकर आता है। स्वतंत्रता दिवस के आसपास बच्चे अपने अभिभावकों के साथ बाजारों, बस स्टैंड और भीड़भाड़ वाले स्थानों पर तिरंगे, सीटी, पुपांडी और दूसरे खिलौने बेचने निकल जाते हैं। कुछ बच्चे अपनी इच्छा से पैसे कमाने के लिए जाते हैं, जबकि कुछ को परिवार की आर्थिक जरूरतों के कारण अभिभावक अपने साथ ले जाते हैं। अनिया के अनुसार, बस्ती के करीब 80 प्रतिशत बच्चे 10 से 15 अगस्त के बीच



सुबह से शाम तक इन वस्तुओं को बेचने में लगे रहते हैं। कुछ बच्चे रोज करीब 150-200 रुपये तक कमाने की बात बताते हैं। उनके लिए यह सिर्फ पांच दिनों का काम नहीं है, बल्कि परिवार की आय में सहयोग करने और अपनी छोटी-छोटी जरूरतें पूरी करने का एक जरिया भी बन जाता है। बस्ती में कई परिवार रेडियम पट्टी बनाने का काम करते हैं, जबकि कुछ महिलाएं भीख मांगकर परिवार चलाती हैं। ऐसे परिवारों के लिए स्वतंत्रता दिवस के आसपास होने वाली अतिरिक्त कमाई महत्वपूर्ण हो जाती है। इसलिए बच्चे भी इस काम में सहयोग करते हैं। इसका असर यह होता है कि जहां शहर के ज्यादातर बच्चे 15 अगस्त को स्कूलों में ध्वजारोहण, सांस्कृतिक कार्यक्रम और देशभक्ति की गतिविधियों में शामिल होते हैं, वहीं इस बस्ती के कई बच्चों का यह दिन सड़क, बाजार और बस स्टैंड पर गुजरता है।



बारिश ने छीना बच्चों का आशियाना

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः अलिना

जयपुर में मानसून की तेज बारिश और हवाओं ने कच्ची बस्तियों में रहने वाले कई परिवारों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। तेज हवा और बारिश के कारण कई झुग्गियां क्षतिग्रस्त हो गईं। झुग्गियों में लगी लकड़ियां, बांस और तिरपाल टूटकर बिखर गए। इससे बच्चों और उनके परिवारों के सामने सुरक्षित रहने की बड़ी समस्या खड़ी हो गई है। बारिश के दौरान प्रेमनगर कच्ची बस्ती की बातूनी रिपोर्टर अलिना ने बताया कि झुग्गियों में पानी भर जाने और तेज हवाओं के कारण तिरपाल और दूसरे सामान उड़ जाने से काफी परेशानी हो रही है। घर का जरूरी सामान भी बारिश में भीगकर इधर-उधर बिखर गया। कई परिवार अपने सामान और बच्चों की किताबों-कॉपियों को प्लास्टिक और बोरियों से ढककर बचाने की कोशिश कर रहे हैं। बारिश और झुग्गियों के टूटने का सीधा असर बच्चों की पढ़ाई पर भी पड़ रहा है। घर में सूखी और सुरक्षित जगह नहीं होने के कारण बच्चे अपनी किताबें और कॉपियां ठीक से नहीं रख पा रहे हैं। लगातार बारिश के दौरान झुग्गी में पानी आने और कमजोर ढांचे के कारण बच्चों के मन में डर भी बना रहता है। बस्ती के परिवारों का कहना है कि बारिश के मौसम में उनकी सबसे बड़ी चिंता बच्चों की सुरक्षा और स्वास्थ्य को लेकर रहती है। कमजोर झुग्गियों में रहना उनके लिए हर बारिश के साथ एक नई परेशानी बन जाता है। परिवार चाहते हैं कि उनके बच्चों को ऐसा सुरक्षित माहौल मिले, जहां वे बिना डर के रह सकें और अपनी पढ़ाई जारी रख सकें। बारिश की बूंदें किसी के लिए अच्छी लग सकती हैं, लेकिन टूटी झुग्गियों में रहने वाले बच्चों के लिए यही बारिश घर, सुरक्षा और पढ़ाई की चिंता लेकर आती है।

बच्चों ने अपने शिक्षकों को दिया सम्मान, रचनात्मक गतिविधियों से मनाया शिक्षक दिवस

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः मोहित

शिक्षक दिवस के अवसर पर जयपुर में चेतना के वैकल्पिक शिक्षा केंद्रों से जुड़े बच्चों ने विभिन्न सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों के साथ मिलकर शिक्षक दिवस मनाया। एजुकेटर के सहयोग से आयोजित इन कार्यक्रमों में बच्चों ने रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से अपने शिक्षकों के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने खुद बनाए ग्रीटिंग कार्ड और कागज के सुंदर गुलदस्ते शिक्षकों को भेंट किए। बच्चों और शिक्षकों ने साथ मिलकर केक काटा और शिक्षक दिवस की खुशियां साझा कीं। इसके अलावा बच्चों ने क्राफ्ट गतिविधि के माध्यम से आकर्षक फोटो फ्रेम बनाए और उन्हें अपने शिक्षकों को भेंट किया। कार्यक्रम में सेल्फी बूथ बच्चों और शिक्षकों के लिए खास आकर्षण का केंद्र रहा। शिक्षकों ने बच्चों के साथ सेल्फी लेकर इस दिन को यादगार बनाया। गतिविधियों के दौरान बच्चों से यह भी बातचीत की गई कि उनके जीवन में शिक्षक की क्या भूमिका है और शिक्षक किस तरह उन्हें सही दिशा दिखाने, सीखने के लिए प्रेरित करने और बेहतर भविष्य बनाने में मदद करते हैं। बच्चों ने अपने अनुभव और भावनाओं को चित्र, क्राफ्ट और बातचीत के माध्यम से उत्साह के साथ साझा किया। बगराना स्कूल की प्रधानाचार्य अनिता मनाना ने कहा, ''चेतना की



ओर से बच्चों के लिए लगातार रोचक और रचनात्मक गतिविधियां आयोजित की जाती हैं। इन गतिविधियों से बच्चे शिक्षा से जुड़े रहते हैं और सीखने के लिए प्रेरित होते हैं। यह बच्चों के समग्र विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।'' वहीं शिक्षिका गीता गोयल ने सेल्फी बूथ के अनुभव को साझा करते हुए कहा, ''फील्ड स्तर पर बच्चों के साथ सेल्फी बूथ के माध्यम से फोटो लेना मेरे लिए बेहद खुशी और यादगार अनुभव रहा। बच्चों का उत्साह और उनके चेहरों की खुशी देखकर मन प्रसन्न हो गया। ऐसे ऊजार्वान बच्चों के साथ जुड़ना और उनकी गतिविधियों को प्रोत्साहित करते हुए उनके चेहरों पर मुस्कान लाना बेहद खास अनुभव है।'' 12 वर्षीय रोहित (परिवर्तित नाम) ने कहा, ''क्राफ्ट से फोटो फ्रेम बनाना मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने अपने शिक्षक के लिए फ्रेम बनाया। सेल्फी बूथ पर सर के साथ फोटो भी खिंचवाई। यह दिन मेरे लिए बहुत यादगार रहा।'' शिक्षक दिवस के इस आयोजन ने बच्चों को अपने शिक्षकों के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त करने का मौका दिया। साथ ही, इन गतिविधियों से बच्चों की रचनात्मकता, अपनी बात कहने की क्षमता और शिक्षा के प्रति जुड़ाव भी मजबूत हुआ।

अपने अधिकारों की समझ और अपनी आवाज के साथ बदलाव की राह पर बढ़ते कदम

पृष्ठ 1 का शेष

बाल अधिकारों पर चर्चा करवाई गई। बच्चों ने जीने, विकास और भागीदारी के अधिकार से जुड़े सवाल तैयार किए और उनके जवाब साझा किए। समूह में काम करने से उन्हें एक-दूसरे की बात सुनने और अपने विचार रखने का मौका मिला। उन्होंने समझा कि बाल अधिकार केवल किताबों में पढ़ने की बातें नहीं हैं। हर बच्चे को जीने, सीखने, सुरक्षित रहने और अपनी बात कहने का अधिकार है। जब बच्चे इन अधिकारों को समझते हैं, तभी वे अपने और दूसरे बच्चों के लिए आवाज उठाने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। जयपुर के प्रशिक्षण में नेतृत्व के गुणों पर भी चर्चा हुई। बच्चों को बताया गया कि एक अच्छा लीडर जिम्मेदारी निभाता है, सही निर्णय लेने की कोशिश करता है, दूसरों की मदद करता है और मिलकर काम करता है। बच्चों से यह भी पूछा गया कि जब उन्हें अपने शिक्षा केंद्र से कार्यालय बुलाया जाता है, तो वे वहां क्यों आते हैं। बातचीत के दौरान उन्हें समझाया गया कि वे जरूरत पड़ने पर अपने शिक्षक से मिलकर अपनी बात रख सकते हैं। धीरे-धीरे आत्मनिर्भर बनना, अपनी बात स्पष्ट रूप से कहना और जरूरत के समय सही निर्णय लेना भी नेतृत्व का हिस्सा है। तीनों शहरों में आयोजित प्रशिक्षणों में गतिविधियां अलग-अलग थीं, लेकिन बच्चों के सामने रखी गई सीख एक-दूसरे से जुड़ी हुई थी। दिल्ली में बच्चों ने खबर लिखने और अधिकारियों को पत्र भेजने का अभ्यास किया। गुरुग्राम में उन्होंने बाल अधिकारों, सुरक्षा और अपने साथियों की मदद करने के महत्व को समझा। जयपुर में उन्होंने खेल और समूह चर्चा के माध्यम से एकाग्रता, आत्मविश्वास और नेतृत्व के गुण सीखे। इन सभी अनुभवों ने बच्चों को अपनी क्षमताओं को पहचानने और अपनी बात रखने के अवसर दिए। लेकिन प्रशिक्षण में सीखना ही आखिरी कदम नहीं है। असली बदलाव तब दिखाई देगा, जब बच्चे इन सीखों को अपने रोजमर्रा के जीवन में अपनाएंगे। जब कोई बच्चा अपने समुदाय में किसी समस्या को देखेगा और उसकी सही जानकारी जुटाकर संबंधित व्यक्ति तक अपनी बात पहुंचाएगा, तब वह अपनी सीख का इस्तेमाल कर रहा होगा। जब कोई बालकनामा रिपोर्टर किसी जरूरी मुद्दे पर जिम्मेदारी से खबर लिखेगा, तब वह दूसरे लोगों का ध्यान उस समस्या की ओर खींचने में मदद करेगा। और जब कोई बच्चा अपने साथी को परेशानी में देखकर उसकी बात सुनेगा और उसे मदद लेने का रास्ता बताएगा, तब भी नेतृत्व की शुरूआत होगी। इसके लिए बच्चों को लगातार अवसर और सहयोग मिलना जरूरी है। परिवार, शिक्षक और समुदाय अगर बच्चों की बात सुनें और उन्हें सुरक्षित तरीके से अपनी राय रखने दें, तो उनका आत्मविश्वास बढ़ सकता है।

बच्चों को लीडर बनाने का अर्थ यह नहीं है कि उन पर बड़ों की जिम्मेदारियां डाल दी जाएं। इसका मतलब है कि उन्हें अपनी उम्र के अनुसार सीखने, सवाल पूछने, निर्णय लेने और अपनी बात रखने का अवसर मिले। दिल्ली, गुरुग्राम और जयपुर के इन प्रशिक्षणों का संदेश साफ है: बच्चे केवल मदद पाने वाले नहीं हैं, वे अपने जीवन और समुदाय से जुड़े बदलावों में भागीदार भी बन सकते हैं। उन्हें सही जानकारी, मार्गदर्शन और अवसर मिलने चाहिए, ताकि वे अपने अधिकारों को समझ सकें और जरूरत पड़ने पर उनके लिए आवाज उठा सकें। बदलाव हमेशा किसी बड़े मंच से शुरू नहीं होता। कभी इसकी शुरूआत एक सवाल से होती है, कभी किसी अधिकारी को लिखे गए पत्र से और कभी किसी ऐसी खबर से, जो लोगों का ध्यान बच्चों की परेशानी की ओर खींचती है। जब बच्चों को अपनी बात कहने का भरोसा मिलता है, तो उनकी आवाज केवल उनकी अपनी नहीं रहती। वह उन दूसरे बच्चों की आवाज भी बन सकती है, जिन्हें अभी तक अपनी बात रखने का मौका नहीं मिला है। क्योंकि हर बच्चे की बात सुना जाना जरूरी है, और हर बच्चे को बदलाव की शुरूआत करने का अवसर मिलना चाहिए।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

खेल-खेल में पैसों का दांव



बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः काजल

जयपुर की बगराना बस्ती में बच्चों के बीच खेल के नाम पर बढ़ रही एक चिंताजनक प्रवृत्ति की जानकारी बातूनी रिपोर्टर काजल ने साझा की। काजल ने बताया कि बस्ती के कुछ बच्चे ताश की पत्तियों और फिल्मी कलाकारों के चित्र वाले पोस्टर-कार्ड से एक ऐसा खेल खेल रहे हैं, जो धीरे-धीरे जुए का रूप लेता जा रहा है। खेल की शुरूआत सामान्य मनोरंजन के रूप में होती है। बच्चे बारी-बारी से कार्ड निकालते हैं और कार्ड के आधार पर हार-जीत तय होती है। इस दौरान हर बच्चा 2-3 रुपये तक की छोटी रकम दांव पर लगाता है। जीतने वाला बच्चा हारने वाले से तय रकम लेता है। धीरे-धीरे यह रकम बढ़कर 5 से 10 रुपये तक पहुंच जाती है। देखने में मामूली लगने वाला यह खेल बच्चों में पैसे के प्रति लालच, हार-जीत की आदत और जोखिम लेने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दे रहा है।

इस खेल का सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि बच्चों में धीरे-धीरे पैसों के लिए खेलने की आदत बन रही है। कुछ बच्चे घर पर कॉपी, किताब या पेन खरीदने के नाम पर पैसे मांगते हैं, लेकिन उन पैसों का इस्तेमाल कार्ड खेलने में किया जा रहा है। इस तरह बच्चों में झूठ बोलने और अभिभावकों से पैसे छिपाने जैसी आदतें भी बढ़ रही हैं। इसका असर उनकी पढ़ाई पर भी दिखाई देने लगा है। बच्चे पढ़ाई और सेंटर की गतिविधियों से ध्यान हटाकर घंटों इस खेल में समय बिताने लगे हैं। हार-जीत को लेकर बच्चों के बीच विवाद और आपसी झगड़े की स्थिति भी सामने आने लगी है। स्थिति की गंभीरता को समझते हुए काजल और 3-4 अन्य बच्चों से व्यक्तिगत रूप से बातचीत की गई। बच्चों को डांटने के बजाय प्यार से समझाया गया कि पैसों के लिए खेलना ऐसी आदत है, जो आगे चलकर गंभीर समस्याओं का कारण बन सकती है। उन्हें बताया गया कि आज 2-5 रुपये से शुरू होने वाली यह आदत आगे चलकर आर्थिक नुकसान, झूठ बोलने और गलत संगति जैसी समस्याओं को जन्म दे सकती है। इसके बाद बच्चों के अभिभावकों से भी बातचीत की गई। उन्हें स्थिति के बारे में बताया गया और आग्रह किया गया कि वे बच्चों को दिए जाने वाले पैसों के इस्तेमाल पर ध्यान रखें। साथ ही, वे समय-समय पर बच्चों से पूछें कि स्कूल या सेंटर के लिए दिए गए पैसे कहां खर्च किए गए। बच्चों को खाली समय में पढ़ाई, चित्रकला, खेलकूद और दूसरी रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ने का भी सुझाव दिया गया।अभिभावकों ने इस विषय को गंभीरता से लेते हुए बच्चों पर नियमित निगरानी रखने और उन्हें इस तरह की गतिविधियों से दूर रखने का आश्वासन दिया। किसी भी गलत आदत को सिर्फ डांट या सजा से खत्म नहीं किया जा सकता। बच्चों को समझ, बातचीत, प्यार और सही विकल्प देकर ही उन्हें ऐसी आदतों से दूर किया जा सकता है।

थाना प्रभारी से मिले कामकाजी बच्चे, मेहनत और हौसले का मिला संदेश



बालकनामा रिपोर्टर - आसिफ

दिल्ली के कमला नेहरू कैंप के कामकाजी बच्चों के लिए चेतना संस्था की ओर से पुलिस इंटरफेस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बस्ती के कई बच्चों को पुलिस अधिकारियों से मिलने और उनके काम को करीब से समझने का मौका मिला। बच्चों ने पुलिस थाने पहुंचकर वहां के थाना प्रभारी से मुलाकात की और पुलिस की कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी प्राप्त की। इस दौरान थाना प्रभारी ने बच्चों से बातचीत करते हुए उन्हें अपने जीवन में मेहनत और लगन के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बच्चों को समझाया कि जीवन में परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, मेहनत और सही दिशा के जरिए अपने लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। थाना प्रभारी ने बच्चों से कहा कि गरीब परिवार में पैदा होना कोई बदकिस्मती नहीं है, बल्कि यह जिंदगी में कुछ अच्छा और बड़ा करने का मौका भी हो सकता है। उन्होंने बच्चों को अपनी परिस्थितियों से हार न मानने और शिक्षा पर ध्यान देने की सलाह दी। बालकनामा रिपोर्टर से बातचीत में कार्यक्रम में शामिल 14 वर्षीय सलिल (परिवर्तित नाम) ने बताया, ''थाना प्रभारी सर ने हमें बहुत अच्छी बातें बताईं। उन्होंने कहा कि हमें अपनी परिस्थितियों से डरना नहीं चाहिए और मेहनत करते रहना चाहिए। उनकी बातें सुनकर मुझे आगे पढ़ने और कुछ अच्छा करने की प्रेरणा मिली।'' कार्यक्रम के दौरान थाना प्रभारी ने बच्चों को उपहार भी दिए। उपहार मिलने पर बच्चों के चेहरे पर खुशी देखने को मिली। बच्चों ने पुलिस अधिकारियों के साथ बातचीत की और अपनी जिज्ञासाओं से जुड़े सवाल भी पूछे। चेतना संस्था की ओर से आयोजित यह कार्यक्रम बच्चों के लिए सीखने और प्रेरणा लेने का एक अच्छा अवसर रहा। पुलिस अधिकारियों से सीधे बातचीत करने से बच्चों के मन में पुलिस के काम को लेकर समझ और विश्वास बढ़ा। साथ ही, बच्चों को यह संदेश भी मिला कि उनकी वर्तमान परिस्थितियां उनके भविष्य का फैसला नहीं करतीं। यह कार्यक्रम बच्चों को शिक्षा, मेहनत और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। बच्चों ने भी इस मुलाकात को अपने लिए एक यादगार अनुभव बताया और आगे मेहनत करने का संकल्प लिया।

बच्चों ने अपने अंदाज में मनाया शिक्षक दिवस, शिक्षकों को दिए तोहफे

बालकनामा रिपोर्टरः जीत

गुरुग्राम के चक्करपुर स्थित शिक्षा केंद्र में 5 सितंबर को बच्चों ने शिक्षक दिवस बड़े उत्साह और खुशी के साथ मनाया। इस दिन बच्चों ने अपने शिक्षकों के साथ मिलकर कार्यक्रम किया और अपनी तरफ से इस दिन को खास बनाने की पहले से तैयारी की थी।शिक्षक दिवस के दिन शिक्षा केंद्र पर बच्चों का अंदाज रोज से बिल्कुल अलग था। कई बच्चियां साड़ी पहनकर केंद्र पहुंचीं, वहीं लड़के शर्ट-पैंट पहनकर आए। बच्चों की यह तैयारी देखकर शिक्षा केंद्र का माहौल उत्सव जैसा हो गया। सभी बच्चे अपने शिक्षकों के साथ शिक्षक दिवस मनाने को लेकर काफी उत्साहित थे। कार्यक्रम की शुरूआत बच्चों और शिक्षकों के साथ केक काटकर हुई। बच्चों ने मिलकर केक काटा और एक-दूसरे के साथ खुशियां बांटीं। इसके बाद बच्चों ने अपने शिक्षकों को शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं दीं। बच्चों ने अपने शिक्षकों के लिए तोहफे भी तैयार किए थे। उन्होंने चॉकलेट और पेन गिफ्ट किए। किसी ने चॉकलेट देकर तो किसी ने पेन देकर अपने प्यार और सम्मान का इजहार किया। बच्चों ने बताया कि शिक्षक उनके लिए सिर्फ पढ़ाने वाले नहीं हैं। शिक्षक उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ अनुशासन, जिम्मेदारी और अच्छे व्यवहार के बारे में भी सीखने में मदद करते हैं। जब उन्हें किसी सवाल का जवाब नहीं पता होता या पढ़ाई में परेशानी आती है, तो शिक्षा केंद्र पर मौजूद शिक्षक उनकी मदद करते हैं। शिक्षक दिवस के मौके पर बच्चों ने अपने शिक्षकों के महत्व पर भी बात की। उन्होंने समझा कि एक शिक्षक बच्चों को सिर्फ किताबों का ज्ञान नहीं देता, बल्कि उन्हें भविष्य के लिए तैयार करता है और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। शिक्षा केंद्र पर मनाए गए



इस कार्यक्रम में बच्चों की खुशी देखते ही बन रही थी। साड़ी में तैयार बच्चियां और शर्ट-पैंट पहनकर आए लड़के पूरे उत्साह से कार्यक्रम में शामिल हुए। केक काटने और चॉकलेट-पेन देने के साथ बच्चों ने अपने शिक्षकों के साथ यादगार पल बिताए। बच्चों के लिए यह शिक्षक दिवस इसलिए भी खास था क्योंकि उन्होंने अपने शिक्षकों के प्रति सम्मान जताने की तैयारी खुद की थी। उनके छोटे-छोटे तोहफों और तैयारियों में साफ दिखाई दे रहा था कि वे अपने शिक्षकों को कितना सम्मान देते हैं। चक्करपुर के शिक्षा केंद्र में मनाया गया यह शिक्षक दिवस बच्चों और उनके शिक्षकों के बीच प्यार, सम्मान और अपनापन दिखाने वाला खास दिन बन गया।

राखियां बेचकर परिवार का हाथ बँटा रहा मासूम

बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी
बातूनी रिपोर्टरः समीर

जयपुर की अलग-अलग कच्ची बस्तियों का दौरा करने के दौरान बालकनामा रिपोर्टर की मुलाकात 13 वर्षीय मीर (परिवर्तित नाम) से हुई। रक्षाबंधन के मौके पर मीर बस्ती में घर-घर जाकर राखियां बेच रहा था। बातचीत में उसने बताया कि वह अपनी मां के साथ नाहरगढ़ बाजार से कम कीमत पर राखियां खरीदकर लाता है और फिर बस्ती में फेरी लगाकर उन्हें बेचता है। मीर ने बताया कि वह सिर्फ रक्षाबंधन के समय ही काम नहीं करता, बल्कि मौसम और काम मिलने के हिसाब से अलग-अलग छोटे-मोटे काम भी करता

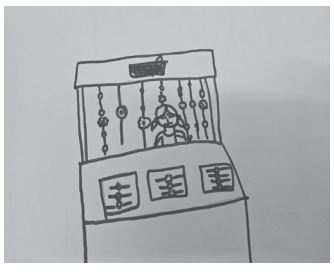

है। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण उसे कम उम्र में ही परिवार की जरूरतों में हाथ बँटाना पड़ रहा है। मीर के अनुसार, उसके पिता शराब का सेवन करते हैं और उसकी मां भिक्षावृत्ति कर परिवार की आर्थिक मदद करती हैं। राखियां बेचकर होने वाली कमाई भी परिवार की रोजमर्रा की जरूरतों में खर्च होती है। इस तरह छोटी उम्र में ही समीर के कंधों पर परिवार की जिम्मेदारियों का बोझ आ गया है। बातचीत के दौरान जब रिपोर्टर ने उससे पूछा कि मौका मिलने पर वह क्या करना चाहता है, तो मीर ने कहा कि वह स्कूल जाकर पढ़ना चाहता है और अपने भविष्य को बेहतर बनाना चाहता है। लेकिन उसके पास आधार कार्ड सहित जरूरी दस्तावेज नहीं होने के कारण वह स्कूल में दाखिला नहीं ले पा रहा है। मीर की आंखों में पढ़ाई करने और आगे बढ़ने का सपना है। उसकी कहानी यह दिखाती है कि आर्थिक परेशानियों और जरूरी दस्तावेजों के अभाव में कई बच्चे शिक्षा से दूर होकर कम उम्र में ही काम करने को मजबूर हो जाते हैं।

किताबों की जगह नन्हे हाथों में आई झाड़ू

बालकनामा रिपोर्टर - फारूख

गुरुग्राम के वजीराबाद, सेक्टर-52 में बालकनामा रिपोर्टर फारूख ने एक दिन चेतना के एजुकेशन सेंटर के सामने 10 साल के बच्चे को झाड़ू लगाते देखा। बच्चा काफी देर से सफाई करने में लगा था। बातचीत करने पर पता चला कि वह पिछले दो महीने से यहां काम कर रहा है और उसे रोजाना 50 रुपये मिलते हैं। बच्चे ने बताया, ''मेरे मम्मी-पापा काम पर चले जाते हैं। मैं यहां झाड़ू लगाता हूं।'' जिस उम्र में बच्चा स्कूल जाकर पढ़ाई और खेलकूद में समय बिताता, उस उम्र में वह रोज काम करने के लिए आ रहा है। परिवार की जिम्मेदारियों और परिस्थितियों के कारण बच्चों का इस तरह कम उम्र में काम करना उनकी पढ़ाई और बचपन पर असर डाल सकता है। बच्चे से बातचीत के दौरान यह भी महसूस हुआ कि उसके लिए यहां झाड़ू लगाना अब रोज की बात बन गई है। लेकिन सवाल यह है कि क्या 10 साल की उम्र में बच्चे का स्कूल की जगह काम पर होना सामान्य माना जा सकता है? बाल मजदूरी के कारण बच्चों के शिक्षा से दूर होने का खतरा बढ़ जाता है। ऐसे बच्चों की स्थिति को समझना और उन्हें दोबारा शिक्षा से जोड़ना जरूरी है। साथ ही, जरूरत पड़ने पर उनके परिवारों को उचित सहायता और सरकारी योजनाओं से जोड़ने की कोशिश भी होनी चाहिए, ताकि बच्चे कम उम्र में मजदूरी करने के बजाय पढ़ाई कर सकें और अपना बचपन जी सकें।

खेल के मैदान से मिली पहचान, हाथों में आया प्रशस्ति-पत्र

बातूनी रिपोर्टरः ओमांश

गुरुग्राम के घाटा में रहने वाले 12 वर्षीय राकिब के हाथ में जब बालकनामा रिपोर्टर ने प्रशस्ति-पत्र देखा, तो उससे पूछा कि यह उसे कैसे मिला। उसने बताया कि हाल ही में हुई एक खेल प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के बाद उसे यह प्रशस्ति-पत्र मिला है। इसे पाकर वह काफी खुश था और खेलों में आगे भी हिस्सा लेने का उसका उत्साह बढ़ा। उसके अनुसार, मिडिल स्कूल, घाटा की ओर से खेल प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। प्रतियोगिता में घाटा से 11 बच्चों ने श्री स्वामीनारायण गुरुकुल इंटरनेशनल स्कूल जाकर हिस्सा लिया। बच्चों ने कबड्डी और खो-खो जैसी खेल प्रतियोगिताओं में भाग लिया। राकिब ने बताया कि उसने कबड्डी और खो-खो दोनों खेलों में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। उसके लिए प्रतियोगिता में शामिल होना सिर्फ प्रशस्ति-पत्र पाने का मौका नहीं था। वहां उसे नए बच्चों के साथ खेलने, उनसे मिलने और अपनी खेल प्रतिभा को आजमाने का मौका भी मिला। प्रशस्ति-

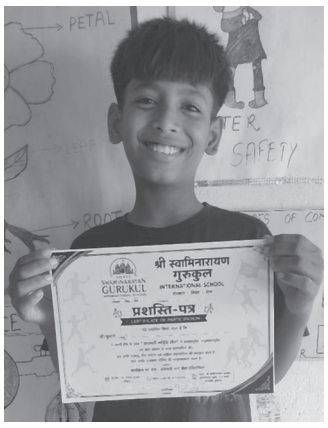

पत्र मिलने के बाद उसे लगा कि उसकी मेहनत को पहचान मिली है। उसने बताया कि अब वह आगे भी खेल प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेना चाहता है और खेलों के माध्यम से अपनी प्रतिभा को और बेहतर बनाना चाहता है। खेल का मैदान उसके लिए सिर्फ खेलने की जगह नहीं रहा। इस प्रतियोगिता ने उसे अपनी प्रतिभा दिखाने और खुद पर भरोसा करने का एक नया मौका भी दिया।

जब बच्चों की मुस्कान पर पड़ता है नशे का साया

बालकनामा रिपोर्टर - दिव्यांशी

गुरुग्राम के एमआर टावर समुदाय में रहने वाले 13 वर्षीय सत्यम (परिवर्तित नाम) के घर का माहौल शराब की वजह से कई बार तनाव और डर से भर जाता है। बालकनामा रिपोर्टर दिव्यांशी ने समुदाय के दौरे के दौरान सत्यम और उसके परिवार की स्थिति के बारे में जाना। सत्यम चेतना के शिक्षा केंद्र पर आता है। सत्यम के अनुसार, उसके पिता शराब पीने के बाद उसकी मां के साथ मारपीट करते हैं। हाल ही में उसके पिता सुबह काम के लिए घर से निकले थे। बाद में परिवार को पता चला कि वह वाटिका चौक पर शराब के नशे में पड़े हुए हैं। परिवार के लोग उन्हें घर लेकर आए। उस समय उन्हें होश नहीं था। उन्हें होश में लाने के लिए उनके चेहरे पर पानी डाला गया, लेकिन इसके बावजूद उन्हें होश नहीं आया।कुछ समय

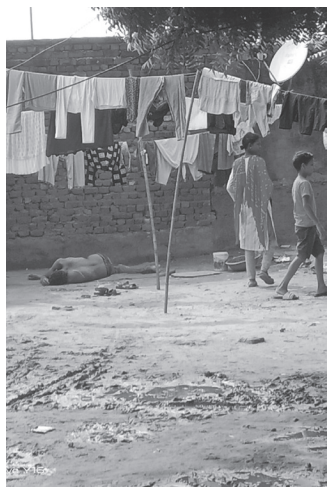

बाद जब सत्यम की मां ने उन्हें उठाने की कोशिश की, तो उन्होंने नशे की हालत में उनके साथ मारपीट की। परिवार में होने वाली ऐसी घटनाएं बच्चों के लिए डर और तनाव का कारण बन सकती हैं। बच्चों के लिए घर एक सुरक्षित जगह होना चाहिए। लेकिन जब घर में शराब के सेवन के कारण बार-बार झगड़े और हिंसा होती है, तो उसका असर बच्चों पर भी पड़ता है। ऐसे माहौल में बच्चों के लिए सुरक्षित और शांत वातावरण में रहना मुश्किल हो सकता है। सत्यम के परिवार की यह स्थिति बच्चों की सुरक्षा और उनके अधिकारों से जुड़ा एक महत्वपूर्ण सवाल सामने लाती है। बच्चों को घर में हिंसा और डर के माहौल से बचाकर सुरक्षित वातावरण देना परिवार और समाज की जिम्मेदारी है। नशे की समस्या और घरेलू हिंसा का असर केवल बड़ों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि बच्चे भी उससे प्रभावित होते हैं। इसलिए बच्चों की सुरक्षा और बेहतर भविष्य के लिए उन्हें सुरक्षित, प्यार भरा और हिंसा से मुक्त वातावरण मिलना जरूरी है।

कागज की कला से कामकाजी बच्चों ने दिखाई अपनी कलात्मकता

बालकनामा रिपोर्टरः जीत

गुरुग्राम के चक्करपुर स्थित शिक्षा केंद्र में जब बच्चों के सामने रंग-बिरंगे कागज रखे गए, तो उनकी उत्सुकता देखते ही बन रही थी। बच्चों को बताया गया कि इन्हीं साधारण कागजों को मोड़कर अलग-अलग आकृतियां बनाई जा सकती हैं। इसके बाद बच्चों ने खुद अपने हाथों से कागज की सुंदर कलाकृतियां बनाईं। शिक्षा केंद्र में बच्चों के लिए आर्ट एंड क्राफ्ट की विशेष गतिविधि आयोजित की गई थी। इस दौरान बच्चों को ओरिगामी पेपर से अलग-अलग आकृतियां बनाना सिखाया गया। बच्चों ने बताए गए तरीके को ध्यान से समझा और एक-एक चरण को खुद करके देखा। जहां किसी बच्चे को परेशानी हुई, वहां उसकी मदद भी की गई। बच्चों ने नारंगी और हरे रंग के कागज का इस्तेमाल करके गाजर की आकृति तैयार की। कागज को सही तरीके से मोड़ना, उसे आकार देना और ऊपर हरे पत्ते लगाना बच्चों के लिए एक नया और मजेदार अनुभव था। अपनी बनाई हुई गाजर देखकर बच्चे काफी खुश हुए और उसे अपने साथियों को दिखाने लगे। इस गतिविधि के दौरान बच्चों ने सिर्फ कागज से आकृति बनाना ही नहीं सीखा, बल्कि धैर्य, एकाग्रता, हाथों की पकड़ और रचनात्मक सोच का भी अभ्यास किया। कुछ बच्चों ने पहली बार में आकृति बनाने की कोशिश की, जबकि कुछ ने दोबारा प्रयास करके उसे और बेहतर बनाया। बच्चों को अपनी कल्पना के अनुसार काम करने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया। एक बच्चे ने बताया कि उसे कागज को मोड़कर कुछ नया बनाना बहुत अच्छा लगा। वहीं दूसरे बच्चों ने कहा कि पहले उन्हें लगता था कि साधारण कागज से कुछ खास नहीं बनाया जा सकता, लेकिन गतिविधि के बाद उन्हें समझ आया कि थोड़ी मेहनत और कल्पना से कागज को भी सुंदर कला में बदला जा सकता है। शिक्षा केंद्र में इस तरह की गतिविधियां बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ अपनी प्रतिभा और कल्पनाशक्ति दिखाने का मौका देती हैं। आर्ट एंड क्राफ्ट के जरिए बच्चे खेल-खेल में नई चीजें सीखते हैं और अपने अंदर छिपी रचनात्मकता को पहचानते हैं। गतिविधि के दौरान बच्चों की बनाई सभी कलाकृतियों को देखा गया और उनकी मेहनत की सराहना की गई। बच्चों ने भी पूरे उत्साह के साथ अपनी बनाई हुई कलाकृतियों के साथ तस्वीरें खिंचवाईं। गतिविधि के अंत में उनके चेहरे पर खुशी और अपनी कला को लेकर गर्व साफ दिखाई दे रहा था।

बारिश में जलभराव और गंदगी से बच्चों के स्वास्थ्य पर बढ़ा खतरा

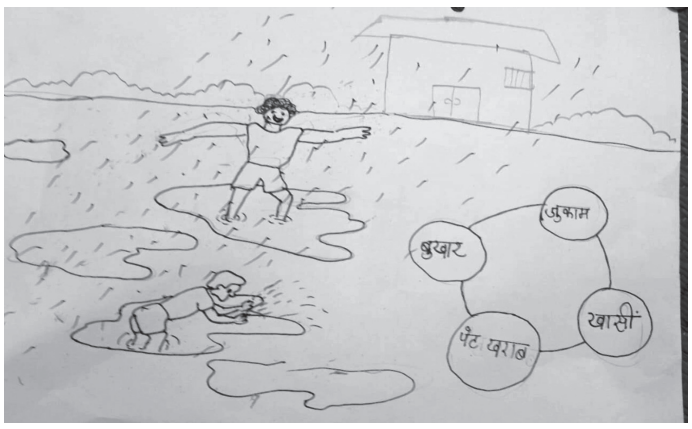

बालकनामा रिपोर्टरः तनमोय सिंह
बातूनी रिपोर्टरः रहमत अली

बारिश के बाद बस्तियों में जगह-जगह जमा पानी, खुले नाले और कचरे के ढेर दिखाई दे रहे हैं। इससे बच्चों के आसपास गंदगी और मच्छरों का खतरा बढ़ गया है। बालकनामा रिपोर्टर तनमोय सिंह ने समुदाय में विजिट के दौरान इन समस्याओं को देखा। कई जगह बारिश का पानी जमा होने के कारण मच्छरों के पनपने की स्थिति बन रही है। ऐसे वातावरण में डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया जैसी मच्छर जनित बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है। वहीं, गंदे पानी और अस्वच्छ वातावरण के कारण बच्चों में दस्त, उल्टी, त्वचा संबंधी समस्याएं और दूसरे संक्रमण का जोखिम भी बना रहता है। रिपोर्टर के अनुसार, खुले नालों और जगह-जगह जमा कचरे के कारण बस्तियों में साफ-सफाई बनाए रखना मुश्किल हो रहा है। जलभराव की वजह से बच्चों के आसपास मच्छरों के पनपने की आशंका भी बढ़ जाती है। समुदाय के लोगों ने बताया कि बारिश के दौरान नालियों की नियमित सफाई, कचरे का सही तरीके से निस्तारण और जमा पानी को जल्द हटाना जरूरी है। बच्चों को भी साफ पानी पीने, खाना खाने से पहले हाथ धोने और गंदे या जमा पानी से दूर रहने के लिए जागरूक किया गया। बारिश का मौसम बच्चों के लिए खुशी लेकर आता है, लेकिन बस्तियों में साफ-सफाई की कमी उनके लिए परेशानी भी बढ़ा देती है। इसलिए समय पर सफाई और जलभराव को दूर करना जरूरी है, ताकि बच्चे सुरक्षित रह सकें।

घर के झगड़ों के बीच छूट रही किशोरी की पढ़ाई

बातूनी रिपोर्टरः दिव्या
रिपोर्टरः अमृत

शराब की लत का असर सिर्फ शराब पीने वाले व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता। घर में इसका असर बच्चों की जिंदगी और उनकी पढ़ाई पर भी पड़ता है। ऐसी ही एक स्थिति दिल्ली के शकूरपुर इलाके में रहने वाली 13 वर्षीय दिव्या (परिवर्तित नाम) के सामने है।दिव्या कक्षा 8 में पढ़ती है। बालकनामा रिपोर्टर अमृत से बातचीत में उसने बताया कि उसके पिता शराब पीते हैं और शराब के नशे में घर आकर झगड़ा करते हैं। पिता के शराब पीकर घर आने के बाद घर का माहौल खराब हो जाता है। घर में होने वाले झगड़े से वह काफी परेशान हो जाती है और कई बार इसी वजह से स्कूल भी नहीं जा पाती। दिव्या ने बताया कि वह पढ़ाई करना चाहती है और नियमित रूप से स्कूल जाना चाहती है। लेकिन घर में होने वाले झगड़ों के कारण उसकी पढ़ाई पर असर पड़ रहा है। स्कूल नहीं जा पाने की वजह से उसके कई पेपर भी छूट गए हैं। इससे उसे अपनी पढ़ाई को लेकर चिंता होती है। बातचीत के दौरान दिव्या ने बताया कि उसकी मां नहीं है। ऐसे में पिता के शराब पीकर घर में झगड़ा करने की वजह से उसे कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वह चाहती है कि घर का माहौल ठीक हो, ताकि



वह बिना किसी परेशानी के स्कूल जा सके और अपनी पढ़ाई जारी रख सके। स्कूल से लगातार दूरी बनने के कारण दिव्या की पढ़ाई पीछे छूट रही है। जिन दिनों उसके सहपाठी स्कूल जाकर पढ़ाई और परीक्षा में शामिल होते हैं, उन दिनों वह घरेलू परिस्थितियों के कारण स्कूल नहीं पहुंच पाती। कई पेपर छूट जाने से उसकी पढ़ाई पर इसका असर और बढ़ गया है। दिव्या की बात से यह भी समझ आता है कि घर का माहौल बच्चों की पढ़ाई और उनके मन पर कितना असर डाल सकता है। बच्चों के लिए घर में सुरक्षित और शांत माहौल होना जरूरी है। किसी बच्चे की शिक्षा घरेलू झगड़ों की वजह से प्रभावित नहीं होनी चाहिए। ऐसे मामलों में बच्चे की सुरक्षा और शिक्षा को प्राथमिकता देना जरूरी है, ताकि घर की परिस्थितियों के कारण उसका भविष्य पीछे न छूटे।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

पिता के नशे का शिकार हुआ मासूम, मजदूरी और कूड़ा बीनकर कर रहा गुजारा

बातूनी रिपोर्टर: पुनीत, रिपोर्टर: अमृत

दिल्ली के लॉरेंस रोड क्षेत्र की बस्तियों में रहने वाले पुनीत ने बताया कि उसके घर के पास एक 13 साल का लड़का सोनू (परिवर्तित नाम) रहता है, जो नशा करता है। पुनीत जब सोनू के साथ उसके घर गया और उससे बातचीत की, तो उसने अपनी जिंदगी के बारे में कई बातें बताईं। उसने बताया कि उसकी मां उसके साथ नहीं रहती हैं और वह अपने पिता के साथ रहता है। उसके पिता काम करते हैं, लेकिन उसे पैसे नहीं देते। इसी वजह से उसे अपना खर्च चलाने और पेट पालने के लिए खुद काम करना पड़ता है। जब उससे पूछा गया कि वह क्या काम करता है, तो उसने बताया कि वह एक फैक्ट्री में साफ-सफाई का काम करता है और कभी-कभी कूड़ा भी बीनता है। दिनभर काम करने के बाद जो पैसे मिलते हैं, उन्हीं से वह अपनी जरूरतें पूरी करने की कोशिश करता है। बातचीत में जब



उससे पूछा गया कि वह नशा क्यों करता है, तो उसने बताया कि वह गलत संगत में पड़ गया था। धीरे-धीरे उसे नशे और सट्टे की लत लग गई। नशे और सट्टे में पैसे खर्च होने के कारण उसकी परेशानी और बढ़ती गई। जब उससे पूछा गया कि वह जो पैसे कमाता है, उनका क्या करता है, तो उसने बताया कि उसके पिता उससे पैसे छीन लेते हैं। इसके बाद जब उसके पिता की कमाई के बारे में पूछा गया, तो उसने बताया कि उसके पिता भी उन पैसों का इस्तेमाल नशा करने में करते हैं। उसने अपनी मां के बारे में बताया कि उसके पिता के नशे के कारण घर में अक्सर माता-पिता के बीच लड़ाई होती थी। इन झगड़ों से परेशान होकर उसकी मां उसे छोड़कर चली गईं। अब वह अपने पिता के साथ रहता है और अपनी जरूरतों के लिए खुद काम करता है। सोनू की ये कहानी बताती है कि घर में नशे की समस्या का असर बच्चों की जिंदगी पर कितना गहरा पड़ सकता है। परिवार का सहारा न मिलने और गलत संगत में पड़ने के कारण बच्चे कम उम्र में ही मजदूरी, कूड़ा बीनने और नशे जैसी समस्याओं से घिर जाते है। ऐसे बच्चों को डांटने या उनसे दूरी बनाने के बजाय उनकी स्थिति को समझकर सही मदद और सुरक्षित माहौल से जोड़ना जरूरी है।



रोजगार की कोशिश में पढ़ाई से दूर हुई दिशिका

बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी
बातूनी रिपोर्टर: खनक

जयपुर की कीर्ति नगर कच्ची बस्ती का दौरा करने के दौरान बातूनी रिपोर्टर खनक की मुलाकात 12 वर्षीय बालिका दिशिका (नाम परिवर्तित) से हुई। बातचीत में पता चला कि कुछ समय पहले बस्ती में रहने वाले परिवारों को रोजगार से जोड़ने के लिए ठेले और हाथ से चलाए जाने वाले सामान उपलब्ध कराए गए थे। इसका उद्देश्य परिवारों की आय बढ़ाना और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना था। दिशिका की नानी को भी रोजगार के लिए एक ठेला दिया गया था। इसके साथ सेवा संघ की ओर से बिंदी, काजल, रबर, लिपस्टिक जैसे फैंसी सामान भी दिए गए थे। लेकिन सामान बेचने की जिम्मेदारी धीरे-धीरे दिशिका पर आ गई। फैंसी सामान खत्म होने के बाद अब दिशिका अपनी नानी के साथ भुट्टे बेचने का काम कर रही है। दिशिका ने बातूनी रिपोर्टर को बताया, ''मेरी नानी मुहाना मंडी से भुट्टे लेकर आती हैं। मैं उन्हें सेककर लोगों को बेचती हूं। एक भुट्टा करीब 20 रुपये में बेचती हूं और दिनभर में लगभग 50 से 60 भुट्टे बेच लेती हूं। इससे घर की जरूरतों में मदद होती है।'' दिशिका ने बताया कि वह स्कूल जाना और दूसरे बच्चों के साथ खेलना चाहती है, लेकिन परिवार की आर्थिक जरूरतों के कारण उसे सामान बेचने के लिए बैठना पड़ता है।

उसने कहा, ''अगर मैं स्कूल चली जाऊंगी तो भुट्टे कौन बेचेगा? घर की कमाई भी कम हो जाएगी।'' हालांकि वर्तमान में बिना दस्तावेज के भी स्कूल में प्रवेश की सुविधा उपलब्ध है, फिर भी परिवार की आर्थिक स्थिति उसके स्कूल जाने में बड़ी बाधा बनी हुई है। बातचीत के दौरान दिशिका ने बताया कि उसे सामान बेचना पसंद नहीं है। वह चाहती है कि दूसरे बच्चों की तरह उसका भी समय स्कूल में बीते, वह पढ़ाई करे और खेलकूद में हिस्सा ले। लेकिन घर की जरूरतों को देखते हुए उसे अपनी इच्छा पीछे रखनी पड़ रही है। दिशिका की कहानी यह सवाल खड़ा करती है कि परिवारों को रोजगार से जोड़ने के साथ यह भी कैसे सुनिश्चित किया जाए कि रोजगार का बोझ बच्चों के कंधों पर न आए। रोजगार की पहल तभी पूरी तरह सफल मानी जाएगी, जब इससे परिवार की आय बढ़ने के साथ बच्चों की पढ़ाई, खेल और बचपन भी सुरक्षित रहे।

बच्चों की आवाज से आया बदलाव, बस्ती में बनने लगे शौचालय

बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी
बातूनी रिपोर्टर: वरुण

जयपुर की लखेसरा बस्ती में इन दिनों एक ऐसा बदलाव दिखाई दे रहा है, जिसका इंतजार यहां के कई परिवार लंबे समय से कर रहे थे। बस्ती में अब घर-घर शौचालय बनाने की शुरूआत हो गई है। इस बदलाव के पीछे बस्ती के बच्चों की आवाज और उनके लगातार किए गए प्रयास की भी बड़ी भूमिका रही है। बस्ती में करीब 80-90 परिवार रहते हैं, लेकिन मुश्किल से 5-6 घरों में ही शौचालय थे। इनमें से भी कई शौचालय टूटे-फूटे या इस्तेमाल करने लायक नहीं थे। शौचालय नहीं होने के कारण महिलाओं, किशोरियों और छोटे बच्चों को सुबह जल्दी या अंधेरे में शौच के लिए बस्ती से बाहर जाना पड़ता था। बस्ती के बच्चे नियमित रूप से चेतना संस्था के शिक्षा केंद्र पर पढ़ने आते हैं। यहां उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ अपने अधिकारों, स्वास्थ्य और सुरक्षा से जुड़ी जानकारी भी मिलती है। केंद्र पर स्वास्थ्य और सुरक्षा को लेकर हुई बातचीत के दौरान बच्चों ने अपनी बस्ती में शौचालय नहीं होने की समस्या सामने रखी। इसके बाद 15-20 बच्चों ने



मिलकर तय किया कि वे इस समस्या को लेकर अपने अभिभावकों और समुदाय के लोगों से बात करेंगे। बच्चों ने माता-पिता को समझाया कि हर परिवार के लिए शौचालय होना कितना जरूरी है। उन्होंने अभिभावकों को नगर निगम के माध्यम से चल रही शौचालय निर्माण योजना के बारे में भी बताया। इस योजना के तहत परिवारों को शौचालय निर्माण के लिए 2,000 रुपये का अंशदान देना है, जबकि बाकी निर्माण लागत नगर निगम द्वारा वहन की जानी है। बच्चों ने अभिभावकों को योजना में शामिल होने और जरूरी सहयोग देने के लिए समझाया, ताकि बस्ती में ज्यादा से ज्यादा घरों में शौचालय बन सकें। बस्ती की 14 वर्षीय रुकसार (परिवर्तित नाम) बताती है, ''हमें सुबह 5 बजे उठना पड़ता था। अंधेरे में मम्मी और चाची के साथ जंगल की तरफ जाना पड़ता था। बरसात में कीचड़ और सांप-बिच्छू का भी डर रहता था।'' अब बस्ती में शौचालय बनने की शुरूआत से लोगों को उम्मीद है कि महिलाओं, किशोरियों और बच्चों को इस परेशानी से राहत मिलेगी। लखेसरा बस्ती के बच्चों की छोटी-सी पहल ने यह दिखाया है कि बच्चे भी अपने आसपास की समस्याओं को समझकर बदलाव की शुरूआत कर सकते हैं।

अभिभावकों के बाहर रहने पर अकेले रह रहे बच्चों पर मंडरा रहा हादसों का खतरा

बातूनी रिपोर्टर - करण कुमार

गुरुग्राम के नाथूपुर में कई बच्चों के माता-पिता काम करने के लिए घर से बाहर जाते हैं। ऐसे में बच्चे कई बार घर पर अकेले रह जाते हैं। कुछ बच्चे बाहर खेलते हैं और खेलते समय छोटी-छोटी बातों को लेकर उनके बीच झगड़ा भी हो जाता है। बालकनामा रिपोर्टर करण कुमार ने नाथूपुर में 9 वर्षीय कपिल (परिवर्तित नाम) से बात की। कपिल चेतना के शिक्षा केंद्र पर आता है। कुछ दिन पहले कपिल के सिर पर चोट लग गई थी। उसने बताया कि वह अपने दोस्त के साथ साइकिल चला रहा था। दोनों के बीच इस बात को लेकर झगड़ा हो गया कि साइकिल कौन चलाएगा। उसके दोस्त ने साइकिल देने से मना कर दिया। इसके बाद दोनों के बीच बहस होने लगी और गाली-गलौज भी हुई। कपिल ने बताया कि इसके बाद उसके दोस्त ने साइकिल से उसके सिर पर मार दिया, जिससे उसके सिर पर चोट लग गई। कपिल के भाई ने उसे डॉक्टर के पास ले जाकर इलाज करवाया। डॉक्टर ने उसके सिर पर पट्टी की। कपिल ने बताया कि जब माता-पिता काम पर जाते हैं तो बच्चे कई बार अकेले रह जाते हैं। ऐसे में बच्चों के बीच झगड़े



हो जाते हैं। उसने बताया कि कई बार बच्चे छत से गिर जाते हैं या सड़क पर गाड़ियों से भी टकरा जाते हैं। बच्चों की सुरक्षा को लेकर रिपोर्टर करण ने कहा कि जब माता-पिता काम पर जाएं तो बच्चों को किसी भरोसेमंद बड़े व्यक्ति के पास छोड़ना चाहिए। बच्चों को अकेला छोड़ने से उनके साथ दुर्घटना होने का खतरा रहता है। इसलिए बच्चों की सुरक्षा का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

स्कूल में दाखिला हुआ लेकिन घरेलू जिम्मेदारियों ने रोकी पढ़ाई

बालकनामा रिपोर्टर: अनुष्की

गुरुग्राम की खोटा कॉलोनी में घूमने के दौरान बालकनामा रिपोर्टर ने देखा कि कुछ बच्चे स्कूल में दाखिला होने के बाद भी रोज स्कूल नहीं जा पाते। इसी दौरान रिपोर्टर की मुलाकात 12 साल की पूनम (परिवर्तित नाम) से हुई। पूनम का स्कूल में दाखिला हो चुका है, लेकिन घर के काम की वजह से वह रोज स्कूल नहीं जा पाती। पूनम का दाखिला चेतना संस्था के कार्यकर्ता की मदद से कक्षा 6 में हुआ है। पूनम ने बताया कि कुछ महीने पहले उसके घर में एक छोटे भाई का जन्म हुआ है। इसके बाद उसकी मां घर के काम नहीं कर पा रही हैं। इसलिए घर के बहुत से काम अब पूनम को करने पड़ते हैं। पूनम ने बताया कि स्कूल जाने से पहले



उसे झाड़ू-पोछा करना, बर्तन धोना, कपड़े धोना और खाना बनाना पड़ता है। इन कामों की वजह से कई बार वह स्कूल नहीं जा पाती। पूनम ने बताया कि उसके स्कूल की छुट्टी शाम करीब 6 बजे होती है। घर पहुंचते-पहुंचते करीब 6:30 से 6:45 बज जाते हैं। घर आने के बाद भी उसे घर के काम करने पड़ते हैं। ऐसे में पढ़ाई के लिए उसे ज्यादा समय नहीं मिल पाता। पूनम ने बताया कि उसे पढ़ना बहुत अच्छा लगता है और वह रोज स्कूल जाना चाहती है। लेकिन घर के काम ज्यादा होने के कारण उसके लिए स्कूल और घर की जिम्मेदारियां दोनों संभालना मुश्किल हो जाता है। वह चाहती है कि उसे पढ़ाई के लिए पर्याप्त समय मिले, ताकि वह नियमित रूप से स्कूल जा सके और अपनी पढ़ाई जारी रख सके।

शिक्षक दिवस पर बच्चों ने जाना डॉ. राधाकृष्णन का जीवन, शिक्षा और बाल अधिकार

बालकनामा रिपोर्टरः जहाना



दिल्ली के शकूर बस्ती समुदाय में चेतना संस्था के एजुकेशन सेंटर पर बच्चों ने उत्साह के साथ शिक्षक दिवस मनाया। इस अवसर पर बच्चों ने शिक्षक दिवस के महत्व और देश के महान शिक्षक एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन के बारे में कई महत्वपूर्ण बातें जानीं। कार्यक्रम में एक सरकारी विद्यालय के शिक्षक को अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने बच्चों से शिक्षा और स्कूल में दाखिले से जुड़ी कई जरूरी बातें कीं। शिक्षक ने बच्चों को बताया कि अगर किसी बच्चे को स्कूल में दाखिला लेने में किसी तरह की परेशानी आती है, तो वह उनसे संपर्क कर सकता है। उन्होंने बच्चों को मेहनत से पढ़ाई करने और अपने भविष्य को बेहतर बनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि बच्चे हमारे देश का आने वाला भविष्य हैं और उन्हें अपने भविष्य के लिए मेहनत और लगन से पढ़ाई करनी चाहिए। बच्चों ने भी उनकी बातों को ध्यान से सुना और शिक्षा से जुड़े सवाल पूछे। इसके बाद बच्चों ने बालकनामा के बारे में भी जानकारी दी। बच्चों को बताया गया कि बालकनामा के माध्यम से बाल पत्रकार बच्चों और समुदाय से जुड़े मुद्दों को अपनी रिपोर्ट के जरिए सामने लाते हैं। कार्यक्रम में बच्चों ने पॉक्सो कानून और बच्चों की सुरक्षा से जुड़ा गीत भी प्रस्तुत किया। गीत के माध्यम से बच्चों को अपने अधिकारों और सुरक्षा के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया गया। बच्चों की प्रस्तुति को सराहा गया और उन्हें आगे भी इस तरह की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस दौरान बच्चों ने शिक्षक दिवस को केवल एक उत्सव के रूप में नहीं मनाया, बल्कि शिक्षा, स्कूल में दाखिला, बाल अधिकार, बच्चों की सुरक्षा और बाल पत्रकारिता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर भी जानकारी हासिल की। कार्यक्रम बच्चों के लिए सीखने, अपनी बात रखने और आत्मविश्वास बढ़ाने का एक अच्छा अवसर रहा।

रंग-बिरंगी राखियां बनाकर मनाया रक्षाबंधन

बालकनामा रिपोर्टरः जीत



गुरुग्राम के चक्करपुर स्थित चेतना के शिक्षा केंद्र पर बच्चों ने रक्षाबंधन का त्योहार उत्साह और खुशी के साथ मनाया। इस अवसर पर बच्चों को शिक्षा केंद्र पर ही राखी बनाना सिखाया गया और सभी राखियां बच्चों ने खुद तैयार कीं। बच्चों ने रंग-बिरंगे धागों, मोतियों और सजावटी सामान की मदद से अपनी पसंद की सुंदर राखियां बनाईं। राखियां तैयार होने के बाद बच्चों ने एक-दूसरे की कलाई पर राखी बांधी। बच्चियों ने अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधकर उनके लिए प्यार और शुभकामनाएं दीं। भाइयों ने भी अपनी बहनों के साथ हमेशा प्यार और सम्मान से रहने का वादा किया। बच्चों ने मिलकर रक्षाबंधन की खुशियां साझा कीं और इस दौरान शिक्षा केंद्र पर रक्षाबंधन से जुड़ा एक पोस्टर भी बनाया, जिसमें भाई-बहन के प्यार और त्योहार के महत्व को दिखाया गया। संस्था की सामाजिक कार्यकर्ता ने बच्चों को बताया कि रक्षाबंधन सिर्फ राखी बांधने का त्योहार नहीं है, बल्कि यह प्यार, विश्वास, सम्मान और एक-दूसरे की मदद करने का संदेश भी देता है। उन्होंने बच्चों को समझाया कि भाई-बहन दोनों को एक-दूसरे की सुरक्षा और सम्मान का ध्यान रखना चाहिए। बच्चों के लिए अपने हाथों से राखी बनाना इस कार्यक्रम का खास हिस्सा रहा। बच्चों ने अपनी पसंद के रंग और डिजाइन चुनकर राखियां तैयार कीं और फिर उन्हीं राखियों से रक्षाबंधन मनाया। इससे बच्चों में रचनात्मकता के साथ मिल-जुलकर त्योहार मनाने की भावना भी देखने को मिली। रक्षाबंधन के आयोजन के दौरान बच्चों के चेहरों पर खुशी साफ दिखाई दे रही थी। बच्चों ने बताया कि अपने हाथों से राखी बनाकर उसे भाई-बहन की कलाई पर बांधना उनके लिए खास अनुभव रहा। शिक्षा केंद्र पर मनाया गया यह रक्षाबंधन बच्चों के लिए खुशी के साथ प्यार, सम्मान और एक-दूसरे का सहयोग करने की सीख भी लेकर आया।

जादू की छड़ी से बच्चों ने बताई अपनी इच्छाएं, अधिकार वृक्ष से जाने अपने अधिकार



बालकनामा रिपोर्टरः आसिफ

दिल्ली के कमला नेहरू कैंप में बालकनामा रिपोर्टर आसिफ ने चेतना संस्था के एजुकेशन सेंटर पर आने वाले बच्चों से बातचीत की। बातचीत में बच्चों ने बताया कि वे सेंटर पर अलग-अलग गतिविधियों में शामिल होते हैं और इन गतिविधियों के जरिए उन्हें पढ़ाई, स्वास्थ्य, सुरक्षा और बाल अधिकारों से जुड़ी कई जरूरी बातें जानने का मौका मिलता है। बच्चों ने बताया कि सेंटर पर समय-समय पर जागरूकता सत्र भी आयोजित किए जाते हैं। इनमें उन्हें अपने अधिकारों के साथ-साथ अपनी बात खुलकर रखने और आसपास की समस्याओं को समझने के बारे में जानकारी दी जाती है।

अलग-अलग गतिविधियों में बच्चों को अपनी बात और अपनी इच्छाएं बताने का मौका भी मिलता है। रिपोर्टर आसिफ ने बच्चों से बातचीत के दौरान 'जादू की छड़ी' गतिविधि के बारे में भी जाना। बच्चों से पूछा गया कि अगर उनके पास सच में जादू की छड़ी होती, तो वे उससे अपने लिए क्या मांगते। इस पर बच्चों ने अपनी-अपनी इच्छाएं बताईं। 15 वर्षीय नितिन ने बताया, ''अगर मेरे पास जादू की छड़ी होती तो मैं उससे एक कम्प्यूटर मांगता, ताकि मैं गेम खेल सकूं।'' 14 वर्षीय अन्नू ने कहा, ''अगर मेरे पास जादू की छड़ी होती तो मैं अपने फेवरेट सिंगर से मिलना चाहती।'' वहीं 11 वर्षीय मधु ने बताया कि वह जादू की छड़ी से अपने लिए अच्छे कपड़े मांगना चाहती है। बच्चों ने बताया कि सेंटर पर 'अधिकार वृक्ष' जैसी गतिविधि भी कराई जाती है। इसके जरिए बच्चों ने सम्मान, सुरक्षा, खेल और अवसर, स्वास्थ्य, घर, भागीदारी और पहचान जैसे अधिकारों के बारे में जाना। बच्चों के अनुसार, ऐसी गतिविधियों से उन्हें अपने मन की बात कहने के साथ यह समझने में भी मदद मिलती है कि उनकी इच्छाओं और जरूरतों के साथ उनके अधिकार भी जरूरी हैं। सेंटर पर होने वाली इन गतिविधियों के जरिए बच्चों को सीखने के साथ अपनी बात रखने का मौका मिलता है। बच्चों का कहना है कि जब वे अपने अधिकारों के बारे में जानते हैं, तो उन्हें अपने आसपास की समस्याओं को समझने और उनके बारे में सवाल करने का भी हौसला मिलता है।



कूड़े के ढेर और मच्छरों के बीच जी रहा बस्ती का बचपन

बातूनी रिपोर्टरः पिंकू

नोएडा शहर की एक झुग्गी बस्ती के बाहर लगातार जमा हो रहे कूड़े से वहां रहने वाले परिवारों की परेशानी बढ़ती जा रही है। बस्ती के आसपास जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हैं, जिससे तेज बदबू फैल रही है। कूड़े के कारण मच्छरों की संख्या भी बढ़ गई है और लोगों के लिए घर के आसपास रहना मुश्किल होता जा रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि बाहर से आने वाले कुछ लोग और कंपनियां बस्ती के आसपास खुले में कूड़ा डाल देती हैं। धीरे-धीरे यह कूड़ा बढ़कर घरों के बेहद करीब तक पहुंच गया है। जिन परिवारों के घर कूड़े के ढेर के पास हैं, उन्हें सबसे ज्यादा परेशानी होती है। गर्मी और उमस के समय बदबू और मच्छरों की समस्या और बढ़ जाती है। लोगों के अनुसार, दुर्गंध इतनी ज्यादा होती है कि कई बार घर के अंदर रहना और खाना खाना भी मुश्किल हो जाता है। गंदगी का असर बच्चों पर भी पड़ रहा है। बच्चे आसपास खेलते हैं और रोजाना कूड़े के ढेर के पास से होकर गुजरते हैं। अभिभावकों को चिंता है कि मच्छरों और गंदगी के लगातार संपर्क में रहने से बच्चों के स्वास्थ्य पर असर पड़ सकता है। ऐसे माहौल में बच्चों के लिए सुरक्षित तरीके से पढ़ाई और खेल-कूद करना भी मुश्किल हो रहा है। बस्ती के लोगों का कहना है कि यहां पहले से ही बुनियादी सुविधाओं की कमी है। ऐसे में घरों के आसपास लगातार कूड़ा जमा होने से उनकी परेशानी और बढ़ गई है। लोगों ने संबंधित विभाग और प्रशासन से कूड़ा जल्द हटाने और नियमित सफाई की व्यवस्था करने की मांग की है। साथ ही कूड़ा डालने के लिए निर्धारित स्थान बनाने की भी मांग की गई है, ताकि बस्ती के आसपास खुले में कूड़ा जमा न हो। लोगों का कहना है कि केवल एक बार कूड़ा उठाने से समस्या खत्म नहीं होगी। नियमित सफाई और कूड़ा उठाने की व्यवस्था जरूरी है। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि कोई व्यक्ति या संस्था बस्ती के बाहर खुले में कूड़ा न डाले। बस्ती के लोगों का सवाल है कि जब साफ और सुरक्षित वातावरण में रहना सभी का अधिकार है, तो उन्हें कूड़े, बदबू और मच्छरों के बीच रहने के लिए क्यों मजबूर होना पड़े?

झुग्गी खाली कराने की धमकी देकर बच्चों से जबरन कराया जा रहा काम

बातूनी रिपोर्टरः दीपी

नोएडा में किराये की झुग्गियों में रहने वाले कुछ बच्चों ने आरोप लगाया है कि उनके मकान मालिक उन्हें डराकर और दबाव बनाकर मजदूरी करवाते हैं। बच्चों के अनुसार, मकान मालिक उन्हें घर से बुलाकर ईंटें ढोने, मिट्टी डालने और निर्माण से जुड़े दूसरे काम करवाते हैं। काम करने से मना करने पर उन्हें गाली-गलौज और झुग्गी खाली करने की धमकी दी जाती है। बातूनी रिपोर्टर ने बच्चों से इस समस्या के बारे में बातचीत की। एक बच्चे ने बताया कि मकान मालिक उसे घर से बुलाकर काम पर ले जाता है। उससे ईंटें ढोने और मिट्टी डालने का काम कराया जाता है। बच्चे ने बताया कि जब वह काम करने से मना करता है तो मकान मालिक गाली-गलौज करता है और कभी-कभी 10 या 20 रुपये देता है। उसका कहना है कि कई बार काम करवाने के बाद पैसे भी नहीं दिए जाते। बच्चों ने बताया कि अगर वे काम से बचने के लिए कहीं चले जाते हैं या काम करने से मना कर देते हैं, तो मकान मालिक शाम को उनके घर पहुंचकर परिवार से गाली-गलौज करता है और झुग्गी खाली करने के लिए कहता है। बच्चों के माता-पिता भी इस स्थिति से परेशान हैं, लेकिन उन्हें डर रहता है कि अगर झुग्गी खाली करनी पड़ी तो वे अपने परिवार के साथ कहां जाएंगे और दोबारा रहने की जगह कैसे तलाशेंगे। इसी डर के कारण वे भी खुलकर विरोध नहीं कर पाते। बातूनी रिपोर्टर से बातचीत में अन्य बच्चों ने भी ऐसी ही परेशानी बताई। बच्चों के अनुसार, मकान मालिक कई बार उन्हें सुबह ही घर से बुलाकर ले जाते हैं और करीब 5 से 6 घंटे तक काम करवाते हैं। कुछ बच्चों ने बताया कि कई बार उन्हें सुबह से शाम तक भी काम करना पड़ता है। बच्चों का कहना है कि उन्हें तेज धूप में भी काम कराया जाता है। काम करते समय हाथ-पैर में चोट लगने के बावजूद कई बार उन्हें दवाई या इलाज नहीं दिलाया जाता। बच्चों के अनुसार, काम करने से मना करने पर उनके साथ गाली-गलौज की जाती है और कुछ मामलों में मारपीट भी की जाती है। कम उम्र में कई घंटे मजदूरी करने के कारण बच्चों की पढ़ाई और रोजमर्रा की जिंदगी भी प्रभावित हो रही है। निर्माण कार्य में ईंट और मिट्टी ढोना बच्चों के लिए शारीरिक रूप से भी मुश्किल है। चोट लगने और तेज धूप में काम करने जैसी परिस्थितियों को लेकर बच्चों की सुरक्षा की चिंता भी सामने आती है। बच्चों की बातों से सामने आती यह स्थिति उनके सामने मौजूद आर्थिक मजबूरी और डर को दिखाती है। बच्चों का कहना है कि उनकी शिकायतों को गंभीरता से सुना जाए और उन्हें सुरक्षित माहौल, शिक्षा तथा जबरन मजदूरी से सुरक्षा मिल सके।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

लगातार एजुकेशन सेंटर आने की मेहनत का मिला इनाम, बच्चों के खिले चेहरे

बालकनामा रिपोर्टर: जीत

चेतना के एजुकेशन सेंटर में रोज कई बच्चे पढ़ने और नई-नई चीजें सीखने आते हैं। कुछ बच्चे स्कूल के बाद सेंटर आते हैं तो कुछ बच्चे रोज सेंटर पर पढ़ाई करते हैं। यहां बच्चों को पढ़ाई के साथ साफ-सफाई, अनुशासन और एक-दूसरे की मदद करना भी सिखाया जाता है। बच्चों को हमेशा बताया जाता है कि रोज सेंटर आना और मन लगाकर पढ़ाई करना जरूरी है। इसी बात को बढ़ावा देने के लिए एक दिन सेंटर पर बच्चों की उपस्थिति का रजिस्टर देखा गया। चेतना के सामाजिक कार्यकर्ता ने रजिस्टर से यह देखा कि कौन-कौन से बच्चे रोज सेंटर आ रहे हैं और किन बच्चों की उपस्थिति 100 प्रतिशत है। रजिस्टर देखने पर कुछ बच्चे ऐसे मिले, जिन्होंने एक भी दिन छुट्टी नहीं की थी। उनकी सेंटर पर 100 प्रतिशत उपस्थिति थी। बच्चों की लगातार मेहनत देखकर कार्यकर्ता ने उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए छोटा सा गिफ्ट देने का फैसला किया। जब बच्चों को बताया गया कि रोज सेंटर आने की मेहनत के लिए उन्हें गिफ्ट मिलेगा, तो वे बहुत खुश हुए। बच्चों को ड्रॉइंग शीट्स दी गईं। ड्रॉइंग शीट्स देखकर बच्चों के चेहरे पर खुशी आ गई। बच्चों ने कहा कि अब वे इन शीट्स पर अपनी पसंद की सुंदर ड्रॉइंग बनाएंगे। एक बच्चे ने कहा कि उसे बहुत अच्छा लगा कि रोज सेंटर आने की उसकी मेहनत को देखा गया। कुछ



बच्चों ने बताया कि उन्हें ड्रॉइंग बनाना बहुत पसंद है। वे इन शीट्स पर पेड़, फूल, घर, तितली और अपनी पसंद की दूसरी चीजों की ड्रॉइंग बनाएंगे। बच्चों के लिए ये ड्रॉइंग शीट्स सिर्फ एक गिफ्ट नहीं थीं, बल्कि उनकी मेहनत का छोटा सा इनाम थीं। जब दूसरे बच्चों ने अपने साथियों को ड्रॉइंग शीट्स लेते देखा तो उनके मन में भी रोज सेंटर आने की इच्छा हुई। कुछ बच्चों ने कहा कि वे भी अगली बार अपनी उपस्थिति 100 प्रतिशत रखने की कोशिश करेंगे। बच्चों ने यह भी समझा कि रोज सेंटर आने से उनकी पढ़ाई नहीं छूटेगी और वे हर दिन कुछ नया सीख पाएंगे। कार्यकर्ता ने बच्चों को समझाया कि गिफ्ट मिलने से ज्यादा जरूरी रोज सेंटर आकर पढ़ाई करना है। अगर कोई बच्चा बीमार हो या घर में कोई जरूरी काम हो, तो छुट्टी हो सकती है। लेकिन बिना किसी कारण के बार-बार छुट्टी करने से पढ़ाई का नुकसान होता है। इसलिए बच्चों को कोशिश करनी चाहिए कि वे रोज समय पर सेंटर आएं और अपनी पढ़ाई जारी रखें।

एनसीसी शिविर में बच्चों ने सीखा अनुशासन, टीमवर्क और नेतृत्व

बालकनामा रिपोर्टर: प्रीति

दिल्ली के ठ-86 समुदाय में रहने वाली 14 वर्षीय रोशनी (परिवर्तित नाम) के लिए दस दिवसीय नेशनल कैडेट कॉर्प्स (एनसीसी) प्रशिक्षण शिविर एक ऐसा अनुभव रहा, जिसने उसका आत्मविश्वास बढ़ाने के साथ उसे अनुशासन और जिम्मेदारी का महत्व भी समझाया। रोशनी राजकीय सर्वोदय सह-शिक्षा विद्यालय, केशवपुरम में दसवीं कक्षा में पढ़ती है। उसे विद्यालय की ओर से दिल्ली कैंट में आयोजित दस दिवसीय एनसीसी शिविर में शामिल होने का मौका मिला। उसके विद्यालय के कई अन्य विद्यार्थियों ने भी शिविर में हिस्सा लिया। शिविर में बच्चों के लिए एक निश्चित दिनचर्या तय की गई थी। सभी बच्चे सुबह सात बजे उठकर समय पर तैयार होते और प्रशिक्षण स्थल पर पहुंचते थे। दिनभर वे अलग-अलग गतिविधियों और प्रशिक्षण सत्रों में हिस्सा लेते थे। बच्चों को ड्रिल, शारीरिक व्यायाम, अनुशासन और टीमवर्क के साथ नेतृत्व क्षमता के बारे में भी सिखाया गया। प्रशिक्षक बच्चों को हर गतिविधि सही तरीके से करने के लिए समझाते और उनका हौसला बढ़ाते थे। रोशनी बताती है कि शुरूआत में कुछ गतिविधियां उसे मुश्किल लगीं, लेकिन लगातार अभ्यास और प्रशिक्षकों के सहयोग से वह धीरे-



धीरे उनमें सहज होने लगी। शिविर का असर रोशनी के आत्मविश्वास पर भी पड़ा। पहले उसे लोगों के सामने अपनी बात रखने में झिझक होती थी, लेकिन समूह गतिविधियों और प्रशिक्षण में लगातार हिस्सा लेने से उसका संकोच कम हुआ। अब वह पहले की तुलना में ज्यादा आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखती है और किसी भी काम को जिम्मेदारी से पूरा करने की कोशिश करती है। रोशनी ने शिविर में यह भी सीखा कि किसी काम को समय पर और जिम्मेदारी के साथ पूरा करना कितना जरूरी है। समूह में काम करना, एक-दूसरे की मदद करना और मुश्किल परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखना भी उसने सीखा। शिविर से लौटने के बाद वह अपनी रोजमर्रा की जिम्मेदारियों को भी समय पर पूरा करने की कोशिश करती है। रोशनी के लिए एनसीसी शिविर सिर्फ शारीरिक प्रशिक्षण का कार्यक्रम नहीं था। वहां उसे नए लोगों से मिलने, उनके साथ मिलकर काम करने और नई चीजें सीखने का मौका मिला। उसे ड्रिल, समूह गतिविधियां और तय समय-सारणी के अनुसार दिनचर्या चलाना सबसे ज्यादा पसंद आया। वह भविष्य में भी एनसीसी की गतिविधियों में हिस्सा लेना चाहती है। रोशनी का कहना है कि बच्चों और किशोरों को ऐसे अवसर मिलने से उनमें अनुशासन, आत्मविश्वास, टीम भावना, नेतृत्व और जिम्मेदारी जैसे गुण विकसित होते हैं। ये सीख आगे चलकर पढ़ाई, काम और जीवन की दूसरी चुनौतियों का सामना करने में उनके काम आ सकती हैं।

पढ़ने की चाहत और परिवार की जिम्मेदारियों के बीच फल बेचता मासूम



बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी
बातूनी रिपोर्टर: आकाश

बालकनामा रिपोर्टर ने कली का भट्टा बस्ती का दौरा किया। इस दौरान रिपोर्टर की नजर फल के ठेले पर फल बेच रहे करीब 13 वर्षीय बालक पर पड़ी। रिपोर्टर ने बालक से बातचीत कर उसके अनुभव और रोजमर्रा की जिंदगी के बारे में जानने की कोशिश की। बातचीत में सामने आया कि छोटी उम्र में ही वह परिवार की जिम्मेदारियों को निभाने के लिए काम कर रहा है। प्रवेश (परिवर्तित नाम) अजमेरी गेट क्षेत्र में किराए के मकान में अपनी तीन बहनों के साथ रहता है। पिता की मृत्यु हो जाने के बाद परिवार की जिम्मेदारी काफी हद तक उसके कंधों पर आ गई है। प्रवेश को पढ़ाई करने की बहुत इच्छा है। वह स्कूल जाकर पढ़ना और अपने भविष्य को बेहतर बनाना चाहता है, लेकिन घर की आर्थिक स्थिति उसके लिए बड़ी चुनौती बनी हुई है। अपनी बहनों के पालन-पोषण और घर के खर्च में मदद करने के लिए प्रवेश दिनभर अलग-अलग जगहों पर फल बेचता है। वह बताता है, ''मैं दिनभर अलग-अलग जगह घूमकर फल बेचता हूं। कभी काम चलता है और कभी नहीं चलता। इसी से मेरे घर का गुजारा होता है।'' छोटी-सी उम्र में जहां बच्चों के हाथों में किताबें और स्कूल का बैग होना चाहिए, वहीं प्रवेश परिवार की जिम्मेदारियों के कारण रोजी-रोटी के लिए मेहनत कर रहा है। इसके बावजूद उसके मन में पढ़ाई करने और आगे बढ़ने की इच्छा बनी हुई है। बालकनामा रिपोर्टर ने प्रवेश को बस्ती में संचालित चेतना के वैकल्पिक शिक्षा केंद्र के बारे में जानकारी दी। रिपोर्टर ने उसे केंद्र पर अपना नाम लिखवाने और नियमित रूप से वहां आकर पढ़ाई करने के लिए भी प्रेरित किया, ताकि वह अपनी पढ़ाई दोबारा शुरू कर सके।

पढ़ने की उम्मीद से स्कूल जाते बच्चे, लेकिन कक्षा में नहीं मिलते शिक्षक

बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी

बालकनामा रिपोर्टर ने जयपुर के अलग-अलग सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों से बातचीत कर शिक्षा से जुड़े उनके अनुभव जाने। बच्चों ने स्कूल में पढ़ाई से जुड़ी कई परेशानियां साझा कीं। बच्चों का कहना है कि वे रोज सुबह इस उम्मीद से स्कूल पहुंचते हैं कि आज कुछ नया सीखने को मिलेगा, लेकिन कई बार कक्षा में शिक्षक मौजूद नहीं होते। ऐसे में बच्चे आपस में बातचीत करते रहते हैं, एक-दूसरे को चिढ़ाते हैं और कई बार पूरा दिन बिना पढ़ाई के ही निकल जाता है। 15 वर्षीय वर्षा (परिवर्तित नाम), कक्षा 7, ने बताया, ''मैं सुबह जल्दी उठकर स्कूल आती हूं। मुझे लगता है कि आज स्कूल में कुछ नया सीखने को मिलेगा, लेकिन कई बार कक्षा में कोई शिक्षक नहीं होता। बच्चों में से ही मॉनिटर को खड़ा कर दिया जाता है और वही बच्चों को निर्देश देता रहता है। ऐसे में हमें समझ नहीं आता कि हम क्या पढ़ें और किससे पढ़ें।'' वहीं 17 वर्षीय अर्पिता (परिवर्तित नाम), कक्षा 11, ने बताया, ''हमारी विषयवार पढ़ाई के लिए शिक्षक कई बार कक्षा में मौजूद नहीं होते। हमने कई बार प्रधानाचार्य को इस समस्या के बारे में बताया। उनका कहना होता है कि अगर शिक्षक नहीं होंगे तो क्या तुम पढ़ाई नहीं करोगे? अपने-अपने क्लास में जाकर खुद पढ़ाई करो।''

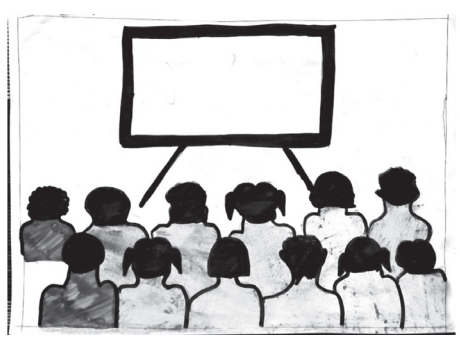

बच्चों के अनुसार, स्कूल में शिक्षकों की बी एल ओ ड्यूटी लगाए जाने के बाद यह समस्या और बढ़ जाती है। उनका कहना है कि जब शिक्षक बी एल ओ ड्यूटी से लौटकर एक-दो दिन के लिए विद्यालय आते हैं, तो उस दौरान भी लंबित ऑनलाइन काम पूरा करने में समय चला जाता है। इससे नियमित कक्षाएं प्रभावित होती हैं और उनकी पढ़ाई पीछे छूट जाती है। बालक विशाल ने बताया, ''यह समस्या लगातार बनी हुई है। जब शिक्षक बी एल ओ ड्यूटी पर जाते हैं तो हमें कई बार स्कूल से खाली हाथ घर लौटना पड़ता है। लंबे समय तक पढ़ाई नहीं हो पाती और बाद में बिना पूरा कोर्स पढ़े ही हमें परीक्षा देनी पड़ती है।'' बच्चों की बातों से यह सामने आता है कि वे पढ़ना चाहते हैं और स्कूल से सीखने की उम्मीद लेकर आते हैं, लेकिन नियमित कक्षाएं और शिक्षकों की उपलब्धता न होने से उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है। बच्चों का कहना है कि उन्हें ऐसा विद्यालय चाहिए, जहां शिक्षक नियमित रूप से कक्षा में आएं, उन्हें पढ़ाएं और उनके सवालों का जवाब दें।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बच्चों को शराब के माहौल से दूर रखने की उठ रही माँग

रिपोर्टरः अमृत

राजधानी दिल्ली की एक बस्ती में छोटे बच्चों से शराब लाने के लिए कहे जाने की बात सामने आई है। स्थानीय लोगों का कहना है कि इलाके में कुछ लोग पैसों, खाने-पीने की चीजों और दूसरी चीजों का लालच देकर बच्चों को शराब लाने के लिए भेजते हैं। लोगों के अनुसार, यह बच्चों को धीरे-धीरे गलत माहौल की ओर ले जा रहा है और इसका असर उनकी पढ़ाई और व्यवहार पर भी दिखाई देने लगा है। बस्ती में रहने वाले 10 वर्षीय पिंटू (परिवर्तित नाम) ने बताया कि कई बार कुछ बड़े लोग बच्चों को शराब लाने के लिए भेजते हैं। उसने कहा कि शुरूआत में बच्चे 10 या 20 रुपये के लिए यह काम कर देते हैं, लेकिन बाद में उन्हें बार-बार बुलाया जाने लगता है। पिंटू के अनुसार, कई बच्चे ऐसे लोगों के साथ ज्यादा समय बिताने लगते हैं और धीरे-धीरे पढ़ाई से उनका ध्यान हटने लगता है। 12 वर्षीय चिंटू (परिवर्तित नाम) ने बताया कि स्कूल खत्म होने के बाद कुछ बच्चे ऐसे लोगों के पास बैठते हैं, जो रोज शराब पीते हैं। उसने कहा कि कई बार बच्चों को दिन में कई बार अलग-अलग जगहों से शराब लाने के लिए भेजा जाता है। कुछ बच्चों का कहना है कि उन्हें ''बस एक बार'' कहकर भेजा जाता है, लेकिन बाद में यह रोज की बात बन जाती है। कुछ बच्चों ने बताया कि शराब लाने के बाद कई बार उन्हें वहीं बैठा लिया जाता है और दूसरे छोटे-मोटे कामों के लिए भी भेजा जाता है। धीरे-धीरे बच्चे उसी माहौल में ज्यादा समय बिताने लगते हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि इसका असर बच्चों की पढ़ाई, ट्यूशन और खेलकूद पर पड़ रहा है। कुछ अभिभावकों ने बताया कि बच्चों का देर से घर लौटना, पढ़ाई में मन न लगना और गलत शब्दों का इस्तेमाल करना जैसी बातें भी सामने आने लगी हैं। इलाके की महिलाओं ने भी



इस स्थिति पर चिंता जताई। उनका कहना है कि छोटे बच्चों को शराब के माहौल में भेजना उनके मानसिक और सामाजिक विकास के लिए नुकसानदायक हो सकता है। एक स्थानीय महिला ने कहा कि बच्चे अपने आसपास का माहौल देखकर बहुत कुछ सीखते हैं। अगर बचपन से ही उनका उठना-बैठना गलत माहौल में होगा, तो इसका असर उनके व्यवहार और सोच पर पड़ सकता है। कुछ स्थानीय लोगों का कहना है कि कई बार बच्चे डर या लालच के कारण घरवालों को इन बातों के बारे में नहीं बताते। अभिभावकों का कहना है कि गलत संगत और शराब के माहौल से बच्चों का भविष्य प्रभावित हो सकता है। उनका मानना है कि आर्थिक तंगी, बेरोजगारी और जागरूकता की कमी भी इस समस्या को बढ़ा रही है। सामाजिक कार्यकताओं का कहना है कि नाबालिग बच्चों को इस तरह के काम में शामिल करना गंभीर मामला है। उन्होंने प्रशासन से मांग की है कि बच्चों को शराब लाने के लिए भेजने वाले लोगों की पहचान कर उनके खिलाफ कार्रवाई की जाए। उनका कहना है कि बस्तियों में बच्चों के लिए शिक्षा, खेलकूद और जागरूकता से जुड़े कार्यक्रम बढ़ाए जाने चाहिए, ताकि बच्चों को सुरक्षित और बेहतर माहौल मिल सके। शिक्षकों ने भी बच्चों के व्यवहार में आ रहे बदलाव को लेकर चिंता जताई है। उनका कहना है कि कुछ बच्चे पढ़ाई पर कम ध्यान दे रहे हैं और स्कूल के बाद गलत संगत में ज्यादा समय बिताने लगे हैं। ऐसे में परिवार, स्कूल और समाज को मिलकर बच्चों पर ध्यान देने की जरूरत है। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि बस्तियों में जागरूकता अभियान चलाए जाएं, शराब से जुड़े अवैध कामों पर निगरानी बढ़ाई जाए और बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। उनका कहना है कि बच्चों को शराब और गलत संगत से दूर रखकर ही उनका बचपन सुरक्षित किया जा सकता है। बच्चों को पढ़ाई, खेल और अच्छा माहौल मिले, यह पूरे समाज की जिम्मेदारी है।

कबाड़ के ढेर में दबा मासूम का बचपन



बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी
बातूनी रिपोर्टरः मोनू

जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा करते हुए बालकनामा रिपोर्टर दामिनी की नजर आगरा रोड की कच्ची बस्ती में कबाड़ इकट्ठा कर रहे कुछ बच्चों पर पड़ी। बच्चों से बातचीत करने पर पता चला कि गरीबी और परिवार की आर्थिक स्थिति के कारण कई बच्चे पढ़ाई करने के बजाय कबाड़ बीनने का काम कर रहे हैं। इन्हीं बच्चों में 11 वर्षीय मोनू (परिवर्तित नाम) भी शामिल है। मोनू अपने माता-पिता के साथ कच्ची बस्ती में रहता है। उसके माता-पिता के पास कोई स्थायी रोजगार नहीं है। परिवार की रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करने के लिए वे कचरे में से प्लास्टिक, बोतलें, लोहा और गत्ता इकट्ठा कर उन्हें बेचते हैं। परिवार की आर्थिक मजबूरी के कारण मोनू भी कम उम्र से ही इस काम में उनके साथ जाने लगा। मोनू ने बताया कि वह सुबह करीब 7 बजे बोरी और कबाड़ उठाने वाले कांटे के साथ घर से निकल जाता है। दिनभर कबाड़ इकट्ठा करने के बाद वह लगभग 200 से 300 रुपये का कबाड़ बेच पाता है। कचरे के ढेरों में कबाड़ तलाशते समय कई बार उसके हाथ-पैर में चोट भी लग जाती है। इसके बावजूद परिवार की आर्थिक जरूरतों के कारण उसे यह काम करना पड़ता है। बालक ने बताया कि वह स्कूल नहीं जा पाता और पढ़ने-लिखने में भी उसे काफी कठिनाई होती है। जब आसपास के बच्चे स्कूल की ड्रेस पहनकर जाते हैं, तो उसका भी स्कूल जाने का मन करता है। लेकिन परिवार की आर्थिक स्थिति के कारण उसे कबाड़ बीनने के लिए मजबूर होना पड़ता है। बालकनामा रिपोर्टर दामिनी ने मोनू को शिक्षा से जोड़ने के लिए बस्ती में चल रहे चेतना वैकल्पिक शिक्षा केंद्र से जुड़ने के लिए प्रेरित किया, जहां उसे पढ़ाई में सहयोग और जरूरी शैक्षिक सामग्री मिल सके। कच्ची बस्तियों में ऐसे कई बच्चे हैं, जो गरीबी, परिवार की आर्थिक मजबूरी और जागरूकता की कमी के कारण शिक्षा से दूर होकर कम उम्र में ही काम करने लगते हैं।

किताबों की जगह हाथ में आई पापड़ों की टोकरी

बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी



जयपुर के जयसिंहपुरा खोर की चेतना बस्ती में दौरे के दौरान बालकनामा रिपोर्टर की नजर एक ऐसी बालिका पर पड़ी, जिसके हाथ में किताबों की जगह पापड़ों की टोकरी थी। वह सड़क किनारे खड़ी होकर आने-जाने वाले लोगों को पापड़ बेच रही थी। पास जाकर बात करने पर 12 वर्षीय शिमला (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वह फिलहाल स्कूल नहीं जाती। शिमला ने बताया कि उसका मन पढ़ाई करने का है, लेकिन उसके स्कूल प्रवेश सम्बंधित दस्तावेज अभी तक नहीं बन पाए हैं। दस्तावेजों के अभाव में उसका स्कूल में दाखिला नहीं हो पाया और धीरे-धीरे उसकी पढ़ाई छूट गई। बालिका बताती है कि वह घर पर खाली नहीं बैठती। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण वह अपनी मां का हाथ बँटाने के लिए रोज पापड़ बेचने निकलती है। उसकी मां भिक्षावृत्ति के लिए जाती हैं, लेकिन इससे नियमित और पर्याप्त आमदनी नहीं हो पाती। घर की जरूरतें पूरी करने में परेशानी होती है, इसलिए शिमला भी परिवार की मदद करना चाहती है। वह बताती है कि एक पापड़ 5 रुपये में बिकता है और वह पूरे दिन में करीब 60-70 रुपये तक कमा लेती है। उसकी मां कच्चे पापड़ सस्ते दामों पर खरीदकर उन्हें तलकर तैयार करती हैं। इसके बाद शिमला उन्हें लेकर बस्ती और आसपास के इलाके में बेचने निकल जाती है। शिमला के लिए पापड़ बेचना सिर्फ कमाई का जरिया नहीं है। वह अपने परिवार की जरूरतों में मदद करने के लिए रोज मेहनत करती है। लेकिन उसके मन में अब भी एक इच्छा है, स्कूल जाने और पढ़ाई करने की। शिमला जैसे कई बच्चों के लिए जरूरी दस्तावेज बनवाना और उन्हें स्कूल से जोड़ना बहुत जरूरी है। अगर समय रहते ऐसे बच्चों की पहचान कर उन्हें दस्तावेज और शिक्षा से जोड़ा जाए, तो वे कम उम्र में काम करने की मजबूरी से बाहर निकलकर अपने सपनों की ओर आगे बढ़ सकते हैं।

स्कूल की राह में खुले गड्ढे, डर के बीच सफर करते बच्चे

बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी
बातूनी रिपोर्टरः भीम

बालकनामा रिपोर्टर ने जयपुर की अलग-अलग बस्तियों में बच्चों की समस्याओं और उनके अनुभवों को जानने के लिए दौरा किया। इस दौरान जयपुर-आगरा रोड के पास स्थित वसुंधरा कच्ची बस्ती के बच्चों ने बताया कि इन दिनों उन्हें स्कूल जाने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बस्ती से बच्चों का स्कूल करीब 4 किलोमीटर दूर है और ज्यादातर बच्चे रोज पैदल ही स्कूल जाते हैं। लेकिन इन दिनों रास्ते में सीवर लाइन और पाइप डालने का काम चल रहा है। इसके लिए जगह-जगह बड़े-बड़े गड्ढे खोद दिए गए हैं और मिट्टी के ढेर लगे हुए हैं। कई जगह रास्ता इतना संकरा हो गया है कि बच्चों को अपना रास्ता बदलकर लंबी दूरी तय करनी पड़ रही है। बच्चों ने



बताया कि खोदे गए गड्ढों के आसपास सुरक्षा के लिए बैरिकेडिंग या बांस-बल्ली भी नहीं लगाई गई है। ऐसे रास्तों से होकर स्कूल जाते समय बच्चों को हर कदम संभलकर रखना पड़ता है। 13 वर्षीय रहीम (परिवर्तित नाम) ने बताया, ''पहले हम सीधे रास्ते से स्कूल जाते थे, लेकिन अब रास्ता खुदा हुआ है। कई जगह से घूमकर जाना पड़ता है। कभी-कभी डर लगता है कि कहीं पैर गड्ढे में न चला जाए। कुछ दिन पहले रास्ते में दो बच्चे गिरते-गिरते बच गए।'' बच्चों और बस्ती के लोगों का कहना है कि सीवर लाइन का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाए। जब तक काम चल रहा है, तब तक खुले गड्ढों के चारों ओर बांस-बल्ली या बैरिकेडिंग लगाई जाए, पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था की जाए और गड्ढों में जमा पानी को निकाला जाए, ताकि बच्चों और बस्ती के लोगों के साथ कोई दुर्घटना न हो।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए एचसीएल फाउंडेशन, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन और Mcarbon Tech Innovation Pvt. Ltd. का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471